॥ श्री भवानी सहस्रनाम स्तवराजम् ॥

॥ शोधकर्ता : दुर्गा लाल शर्मा राजपुरोहित, किश्तवाड़ ॥

१९२

॥ श्री भवानी सहस्रनाम स्तवराजम् ॥

यत्रास्तिभोगो नहि तत्र मोक्षो, यत्रास्ति मोक्षो न हि तत्र भोगः ।
श्री सुन्दरीसेवनतत्पराणां, भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव ॥

॥ श्री ॥

॥ श्री भवानी सहस्रनाम स्तवराजम् ॥

पाठविधि सहित तथा संशोधित एवं
क्रमबद्ध संस्कारकृत।

आदरणीया श्रीमती प्रेमदेवी ग्रन्थमाला
का द्वितीय स्मृति पुष्प

दिवंगत ज्योतिषाचार्य पं० हरिलालजी शर्मा
'व्यास' के प्रति
सादर समर्पित।

॥ शोधकर्ता : दुर्गा लाल शर्मा राजपुरोहित, किश्तवाड़ ॥

॥ जय माँ भवानी ॥

ॐ

ऐं

ह्रीं

क्लीं

चामुण्डायै

विच्चे ॥

ॐ

ऐं

ह्रीं

क्लीं

चामुण्डायै

विच्चे ॥

॥ मन्त्रार्थ : पृष्ठ ८२-८३ पर देखें ॥

॥ विषयानुक्रमणिका ॥

: श्री :

प्रकाशकीय

आदरणीय श्रीमती प्रेम देवी 'ग्रंथमाला' का द्वितिय पुष्प सुविज्ञ एवं धर्मनिष्ठ पाठकों के हाथों देते हुए हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। 'श्रीस्थल देवी दर्शनम' के पश्चात् यह दूसरा पुष्प, अनेक कठिनाइयों के बावजूद, पाठकों के समक्ष हम प्रस्तुत कर सकें हैं। यह अपने में एक गौरव का विषय है।

शक्ति और भक्ति हमारी संस्कृति के मूलाधार रहें है। भक्ति बिना शक्ति के निर्बल होती है और शक्ति बिना भक्ति के पाश्विक एक आसुरी रूप धारण करती है। वास्तव में शक्ति ओर भक्ति के बीच सन्तुलन ओर सामंजस्य ही धर्म और शांति के सबल आधार हैं। यह शाश्वत सिद्धांत इस सम्पूर्ण ब्रह्मामण्ड में कार्यरत्त है। यदि भक्ति और शक्ति में उचित सामंजस्य एवं सन्तुलन नहीं रहता तो प्रकृति में असन्तुलन का नकारात्मक सिद्धांत कार्य करना शुरु कर देता है जिससे अधर्म पनपता है और अशांति फैलती है।

हम जिस भक्ति का अनुसरण करते हैं, उसमें प्रायः अहंकार काआधिक्य रहता है और हमारे अन्दर जो भक्ति है, उसमें तमोगुण का प्राधान्य है। निश्छल, श्रद्धायुक्त एवं वितण्डावाद से रहित भक्ति और सद्गुण सम्पन्न शक्ति ही हमारे व्यक्तिगत और समष्टिगत जीवन में महत्व का स्थान रखती है, और हमारे अस्तित्व को बनाये रखने के लिये आवश्यक भी है।

जगज्जननी मां भवानी, शक्ति और भक्ति का साक्षात एवं साकार रूप है। वह जगत् का कारण है; संचालिका एवं निर्मातृी है। अनेक रूपों से यह विश्व का परिपालन करती है,इसके उद्भव एवं प्रलय को नियंत्रित करती है। यह परमपिता,

सच्चिदानंद ब्रह्म का मातृरूप है जो चराचर जगद को मातृत्व की शीतल छाया प्रदान करती है। परन्तु विश्व में धर्म और शान्ति स्थापित करने के लिए दुष्टों ओर अधर्मियों का दलन भी करती है।

हम जगदम्बा भगवती के भक्त हैं, उपासक हैं, श्रद्धालू हैं और हमोर मन में भवानी के प्रति अनन्य प्रेम भी है। भक्ति और प्रेम की यह अजस्र धारा बहती रहे; इस उद्देश्य को लेकर ही प्रस्तुत पुस्तिका की रचना की गई है। परन्तु हमें इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि भक्ति के साथ-साथ अपने अन्दर सद्गुण सम्पन्न, आसुरी-भावों से रहित प्रचंड शक्ति का भी विकास हो। वर्तमान परिस्थितियों में यह हमारे लिए और भी अधिक महत्वपूर्ण है, अपरिहार्य है।

विद्वान लेखक श्री दुर्गा लाल जी ने मां भवानी के एक हजार नामों का स्तोत्र एवं अन्य कुछ पाठ, स्तवन इत्यादि टीका एवं विधि सहित संकलित एवं सम्पादित किये हैं, जो कि माता के श्रद्धालू भक्तों के लिए बड़े लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं। लेखक इस प्रयास के लिए बधाई के पात्र हैं।

हम आशा करते हैं कि हमारी यह प्रस्तुति श्रद्धालुओं एवं भगतजनों के लिए अवश्य लाभदायक सिद्ध होगी।

विनीत

मन्त्री, प्रकाशन विभाग

हिन्दू शिक्षा समिति (पंजीकृत)

किश्तवाड़—१८२२०४

फाल्गुन १८, २०५१

प्रस्तावना

अभिप्रेतार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि।
सर्व विघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः ॥

अभीष्ट की सिद्धि के लिए जिस आदि देव का पूजन देवतागण भी करते हैं, उस सर्व विघ्नभञ्जन गणपति गणेश को हमारा सादर नमस्कार है।

माँ भगवती जगदम्बा 'दुर्गासप्तशती' अध्याय ११ मन्त्र ५५ में स्वयं अपने मुखारविन्द से देवताओं से इस प्रकार सम्बोधन करती हैं :

इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति।
तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरि संक्षयम् ॥

अर्थात् जिस प्रकार महिषासुर, शुम्भ-निशुम्भ, रक्तबीज आदि प्रमुख दानवों (राक्षसों) का समूल नाशकर आप लोगों को पुनः विपत्तिमुक्त एवं अधिकारयुक्त किया, ठीक इसी प्रकार भविष्य में भी दानवी उत्पात होने पर अवतार लेकर शत्रुओं का वध करती रहूँगी। केवल श्रद्धा एवं आर्तभाव से (आपद्ग्रस्त लोगों को मुझे) स्मरण करने की आवश्यकता अपेक्षित है।

॥ कलौ चण्डी विनायकौ ॥

कलियुग में 'माँ चण्डी' तथा 'गणपति गणेश' प्रधान देव हैं। इन देवों का इस कलिकाल में शतप्रतिशत मङ्गलमय प्रभाव सर्वविदित एवं प्रत्यक्ष प्रमाण है।

मुनिवर सूत जी ने ऋषियों से कलियुग का विस्तृत वर्णन किया है। विस्तार भय से केवल एक श्लोक का साक्षात्कार करवाना अप्रासङ्गिक नहीं होगा :

कामार्त्ता ह्रस्वदेहाश्च लुब्धा अन्योन्यतत्पराः।
कलौ सर्वे भविष्यन्ति स्वल्पायुर्बहुपुत्रकाः॥

अर्थात् कलियुग में प्रायः सभी लोग कामातुर (इच्छाओं के दास), नाटे कद के तथा लोभी होंगे और धर्म एवं ईश्वर का आश्रय छोड़कर आपस में एकदूसरे पर निर्भर होंगे। सभी लोग अल्पायु किन्तु एक से अधिक सन्तान वाले होंगे। ऋषिवर का उक्त कथन सर्वथा निर्विवाद है।

धर्म तथा ईश्वर पर आस्था रखना और आश्रय पकड़ना त्रिविध ताप से मुक्ति दिलाने का एक मात्र साधन है।

धर्म क्या है ?

धारयसीति धर्मः॥

धर्म का अर्थ है—धारण करना। अतः ऐसी भावनाएँ मत धारण कीजिए जिससे दूसरों को कष्ट हो। समाज के हित में ही प्राणी का कल्याण निहित है। समाजानुकूल आचार, विचार तथा व्यवहार धारण करना एवं अपनाना ही धर्म है। धर्म कर्त्तव्याकर्त्तव्य का बोध कराता है। धर्माचरण एवं धर्मानुसरण से ही व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र का उत्थान, धारण, पोषण तथा चतुर्दिक् विकास निश्चित है। धर्माचरण से सद्बुद्धि प्राप्त होती है। धर्म नियन्त्रित बल दिव्य बल है। धर्म से विद्रोह

कर सुख समृद्धि और इनसे बढ़कर शान्ति सौख्यादि पुण्य फलों की इच्छाओं का साकार होना मृगतृष्णा मात्र है। स्वधर्म पालन परम मङ्गलमय है। ऐसा भगवान् वासुदेव का भी आदेश है। यथा :

श्रेयान् स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥ गी० ३।३५

अर्थात् भली प्रकार आचरण किये हुए दूसरे के धर्म से गुणरहित भी अपना धर्म अत्युत्तम है। अपने धर्म में मरना भी कल्याण कारक है किन्तु दूसरे का धर्म भय प्रदान करने वाला है ॥ संक्षेप में भय, आतंक, अकर्मण्यता, दुर्बलता आदि अवाञ्छनीय दुर्गुणों से मुक्ति दिलाने का तथा निर्भयता, सबलता एवं स्फूर्तिदायक सद्गुणों से युक्त कराने वाला एकमात्र सबल साधन स्वधर्म पालन एवं ईश्वर का समाश्रयण ही है। लोग धर्म एवं ईश्वर से जितना ही विमुख तथा दूर होते जायेंगे उतना ही विपत्ति के जाल में फँसते चले जायेंगे। किसी भी कार्य को सशक्त एवं सफल बनाने के लिए, लौकिक एवं पारलौकिक सुधार के लिए शक्ति की अपेक्षा है, उसकी प्राप्ति धर्माचरण और सर्वज्ञ-सर्वव्यापक-सर्वशक्तिमान ईश्वर की शरणागति के बिना संभव नहीं।

प्रस्तुत 'भवानी सहस्रनामस्तोत्र' सनातन धर्मप्रेमियों के कर-कमलों में—पठन, चिन्तन-मनन एवं श्रवणार्थ भेंट किया जा रहा है। उत्तराखण्ड में प्राचीन काल से 'भवानी सहस्रनाम' तथा 'इन्द्राक्षी' स्तोत्रों का विधिवत् पाठ हमारे पूर्वजों के लिए महाफलदायक, अमङ्गलहारी एवं दैनिक कार्य-कलापों में स्फूर्तिदायक स्रोत रहा है। उक्त स्तोत्रों को श्रद्धा एवं भक्तिभाव से पाठ करने पर अभीष्ट की सिद्धि होती है—ऐसा हमारा अनुभूत प्रयोग है।

समाज कल्याण में ही हमारा कल्याण निहित है। इस आस्था से प्रेरित होकर तथा धर्म-प्रेमियों के प्रोत्साहन पर हमने—पाठ-भेद एवं क्रम-व्यवस्था संस्कार करके और 'पाठ-विधि' का अध्याय जोड़कर उक्त स्तोत्रों के पाठ को प्रभावशाली

एवं प्रेरणादायक बनाने का प्रयत्न किया है ताकि यथाविधि और भक्तिभाव से पाठ करने से उत्पन्न मंगलकारी प्रभाव से लाभान्वित होकर माँ जगदम्बा अष्टादश भुजा के श्री चरणों में अटूट श्रद्धा एवं विश्वास पैदा हो, तभी हम अपने श्रम को सफल समझेंगे। निम्नश्लोक प्रस्तुतकर अपनी लेखनी को विराम देते हैं :

भ्रमराः मधुमिच्छन्ति व्रणमिच्छन्ति माक्षिकाः।
सज्जनाः गुणमिच्छन्ति दोषमिच्छन्ति पामराः ॥

माँ श्रीस्थलदेवी भगवती अष्टादशभुजा आप का कल्याण करे।

विदुषामनुचरः ***दुर्गा लाल शर्मा***

पाठ-विधि :

'भवानी सहस्रनामस्तवराज' का पाठ करने वाले साधकों को पाठारम्भ के पूर्व नित्य कर्म— शौच, दन्तधावन, स्नानदि से निवृत होकर शुद्ध स्थान में—शुद्ध आसन, गन्ध, पुष्प अक्षत, धूप, दीप, नैवेद्य आदि प्रयोग में आनेवाली आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था कर निम्नमन्त्र से आसन पर जल छिड़क कर बैठ जाना चाहिए :

॥ आसन शोधन मन्त्रः ॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका, देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि, पवित्रं कुरु चासनम् ॥

॥ गुरु वन्दना ॥

अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

॥ अङ्ग स्पर्शनम् ॥

निम्न वाक्यांशों को बोलते हुए दोनों हाथों के अग्रभाग से निर्दिष्ट अङ्गों का स्पर्श करें :

आपः स्तनयोः ॥ (स्तनों का स्पर्श), **ज्योतिर्नेत्रयोः ॥** (नेत्रों का स्पर्श), **रसो मुखे ॥** (मुखस्पर्श), **अमृतं ललाटे ॥** (मस्तक स्पर्श), **ॐ ब्रह्मभूर्भुवः शिरसि ॥** (सिर का स्पर्श करें)

॥ श्री गणेश-पूजन ॥

पूर्व स्थापित गणपति की मूर्ति या चित्र पर श्रीगणेश की 'ॐ गं गणेशाय नमः' इस मन्त्र से गन्ध-पुष्प समर्पित कर, निम्न मन्त्र पढ़ते हुए ध्यान एवं आवाहन की भावना करके पुष्प छोड़ें:

गजाननं भूतगणादिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारु भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाश कारकं नमामि विघ्नेश्वर पादपङ्कजम् ॥

॥ रक्षार्थ प्रार्थना ॥

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव-भवार्णवात् ॥

॥ गौरी-पूजन ॥

दाहिने हाथ में लाल पुष्प और अक्षत लेकर निम्न मन्त्र से माँ गौरी का ध्यान एवं आवाहन करते हुए पुष्प और अक्षत अर्पित करें

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मां नयति कश्चन।
ससंस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम् ॥

आवाहित करके **'ॐ गौं गौर्यै नमः'** प्रत्येक बार बोलकर पञ्चोपचार **(गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवद्य)** से पूजन करें। यथाः **ॐ गौं गौर्य नमः गन्धं समर्पयामि नमः ॥**

॥ रक्षार्थ प्रार्थना ॥

सर्व मङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥

इस के पश्चात् निम्नलिखित भवानी स्तोत्र का पाठ करें :

संकटमोचन भवानी स्तोत्रम्

नमो काशिनी वासिनी गङ्ग तीरे सदा अर्चितं चन्दनं रक्तपुष्पम्।
सदा ध्याय्यते पूजिते सर्वदेवं नमो सङ्कटा कष्टहरणी भवानी ॥१॥
नमो मुक्त देवी नमो वेदमाता सदा योगिनी योगिनी योगगम्या।
सदा कामिनी मोहितं कामराजं नमो सङ्कटा कष्टहरणी भवानी ॥२॥
नमो खड्गहस्ते गले रुण्डमाला नमो गर्जितं भूमिकं पाहिमानाम्।
सदा वन्दितं पूजितं सर्वदेवं नमो संकटा कष्टहरणी भवानी ॥३॥
नमो मोहिते मोहितं भूत सैन्यं सदा चन्द्र वदने हंसौ वैकरालम्।
सदा मृगनयने गुणरूपवर्णे नमो संकटा कष्टहरणी भवानी ॥४॥
नमो पुष्प शय्या गलेरत्न माला सदा कोकिला काञ्चनं रूपवर्णे।
सदा रण-विषे शत्रु संहारकरनी नमो संकटा कष्टहरनी भवानी ॥५॥
तू ही संकटा योगिनी योगधारी तू ही कामिनी कामिनी कामराजम्।
तू ही विश्वमाता करे खप्परधारी नमो संकटा कष्टहरणी भवानी ॥६॥
इदं पञ्चरत्नं पठेत्प्रातः काले हरे पाप तन के बढ़े धर्म ज्ञानम्।
सदा दुःख में सुख में रक्षपाल करनी नमो संकटा कष्टहरणी भवानी ॥७॥

नोट : उपर्युक्त स्तोत्र में केवल छः श्लोक अपेक्षित हैं किन्तु मूल प्रति उपलब्ध न होने के कारण भक्तजनों द्वारा मौखिक आधार पर संस्कार करके प्रस्तुत कर रहे हैं ॥

इसके पश्चात् जिस पुस्तक से पाठ करने जा रहे हैं, उसकी भी पञ्चोपचार विधि से अथवा केवल गन्ध-पुष्प से पूजन करके पुस्तक हाथ में न रखकर वरन् पुस्तक-पीठिका पर रखकर तथा योनिमुद्रा से प्रणाम कर पाठारम्भ करना चाहिए। माँ जगदम्बा अवश्य ही आप को चिन्तामुक्त करेंगी तथा शान्ति-सौख्यादि अभीष्ट उपलब्धियाँ दिलायेंगी। ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है।

॥ तावद्भयस्य भेतव्यं यावद् भयमनागतम् ॥

निवेदक

दुर्गा लाल शर्मा राजपुरोहित

॥ श्री भवानी सहस्रनाम पाठारम्भ ॥

ॐ स्वस्ति श्री गणाधिपतये नमः ॥ श्री गुरवे नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥

ओ३म् नमो भगवत्यै ॥ ओ३म् नमो भवान्यै ॥

ॐ शंख त्रिशूल शर चाप करां त्रिनेत्रां तिग्मेतरां शुकलया विलसत्किरीटाम् ।
सिंहस्थितामसुर सिद्धनुतां च दुर्गां दूर्वानिभां दुरित दुःख हरां नमामि ॥१॥

ॐ अकुल कुलपतन्ती चक्रमध्येस्फुरन्ती मधुरमधुपिबन्ती कण्टकान् भक्षयन्ती ।
दुरितमपहरन्ती साधकान् पोषयन्ती जयति जगतिदेवी सुन्दरी क्रीडयन्ती ॥२॥

चतुर्भुजामेकवक्त्रां पूर्णेन्दु वदन प्रभाम् खड्गशक्तिधरां देवीं वरदामभयपाणिकाम् ।
प्रेतसंस्थां महारौद्रीं भुजगेनोपवीतिनीम् । भवानीं काल संहार बद्धमुद्राविभूषिताम् ॥३॥
जगत्स्थितिकरीं ब्रह्मविष्णुरुद्रादिभिः सुरैः । स्तुतां तां परमेशानीं नौम्यहं विघ्नहारिणीम् ॥४॥

॥ ॐ नमो भवान्यै ॥

कैलास शिखरे रम्ये देवदेवं महेश्वरम् । ध्यानो परतमासीनं प्रसन्नमुखपङ्कजम् ॥५॥
सुरासुर शिरोरत्न रञ्जितांघ्रियुगं प्रभुम् । प्रणम्य शिरसा नन्दी बद्धांजलिरभाषत ॥६॥

॥ श्री नन्दी महेश्वर संवाद ॥

श्री नन्दिकेश्वर उवाच ॥

देवदेव जगन्नाथ संशयोऽस्ति महान्मम। रहस्यमेकमिच्छामि प्रष्टुं त्वां भक्तवत्सल ॥१॥
देवतायास्त्वयाकस्या स्तोत्रमेतद्दिवा निशम्। पठ्यते विरतं नाथ ! त्वत्तः किमपरं परम् ॥२॥
इति पृष्टस्तदादेवो नन्दिकेन जगद्गुरुः। प्रोवाच भगवानेको विकसन्नेत्र पङ्कजः ॥३॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

साधुसाधु गण श्रेष्ठ पृष्टवानसि मां च यत्। स्कन्दस्यापि च यद्गोप्यं रहस्यं कथयामि तत् ॥४॥
पुराकल्पक्षये लोकान् सिसृक्षुर्मूढचेतसा। गुणत्रयमयी शक्तिर्मूल प्रकृति संज्ञिता ॥५॥
तस्यामहं समुत्पन्नस्तत्त्वैस्तैर्महदादिभिः। चेतनेति ततः शक्तिर्मां काप्यालिङ्ग्यतस्थुषी ॥६॥
हेतु सङ्कल्प जालस्य मनोऽधिष्ठायिनी शुभा। इच्छेति परमाशक्तिरुन्मिमीलततः परम् ॥७॥
ततो वागिति विख्याता शक्तिः शब्दमयीपुरा। प्रादुरासीज्जगन्माता वेदमाता सरस्वती ॥८॥
ब्राह्मी च वैष्णवी रौद्री कौमारी पार्वती शिवा। सिद्धिदा बुद्धिदा शान्ता सर्वमङ्गलदायिनी ॥९॥
तयैतत्सृज्यते विश्वमनाधारं च धार्यते। तयैतत्पाल्यते सर्वं तस्यामेव प्रलीयते ॥१०॥
अर्चिता प्रणताध्याता सर्वभाव विनिश्चितैः आराधितास्तुतासैव सर्वसिद्धि प्रदायिनी ॥११॥
तस्या , अनुग्रहादेव तामेवस्तुतवानहम्। सहस्रैर्नामभिर्दिव्यैस्त्रैलोक्य प्राणि पूजितैः ॥१२॥

स्तवेनानेन सन्तुष्टा मामेव प्रविवेश सा। तदारभ्य मया प्राप्तमैश्वर्यपदमुत्तमम् ॥१३॥
तत्प्रभावान् मया सृष्टं जगदेतच्चराचरम्। ससुरासुर गन्धर्व यक्ष राक्षस मानवम् ॥१४॥
सपन्नगं ससमुद्रं सशैलवनकाननम् ।सराशि ग्रह नक्षत्रं पञ्चभूत गुणन्वितम् ॥१५॥
नन्दिग्राम सहस्रेण स्तवेनानेन सर्वदा। स्तवे परापरां शक्तिं ममानुग्रहकारिणीम् ॥१६॥
इत्युक्त्वो परतं द्रेवं चराचर गुरुं विभुम्। प्रणम्य शिरसा नन्दी प्रोवाच परमेश्वरम् ॥१७॥

॥ श्री नन्दिकेश्वर उवाच ॥

भगवन् देव देवेश लोकनाथ जगत्पते। भक्तोऽस्मि तवदासोऽस्मि प्रसादः क्रियतामयि ॥१८॥
देव्याः स्तवमिमं पुण्यं दुर्लभं यत्सुरैरपि। श्रोतुमिच्छाम्यहं देव प्रभावमपि चास्य तु ॥१९॥

॥ श्री भगवानुवाच ॥

शृणु नन्दिन् महाभाग स्तवराजमिमं शुभम्। सहस्रैर्नामभिर्दिव्यैः सिद्धिदं सुख मोक्षदम् ॥
शुचिभिः प्रातरुत्थाय पठितव्यं समाहितैः। त्रिकालं श्रद्धयायुक्तैर्नातः परतरः स्तवा ॥

अथ विनियोगः

ॐ अस्य श्री भवानी सहस्रनामस्तवराजस्य, महादेव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, आद्याशक्तिः, श्री भगवती भवानी देवता, ह्रीं बीजम्, क्लीङ्कीलम्, श्रींशक्तिः, आत्मनो वाङ्मनःकायोपार्जित पाप निवारणार्थं, श्री भगवती भवानी सन्तोषणार्थं, सकलकामना सिद्ध्यर्थं च पाठे विनियोगः। (उपर्युक्त पाठ पढ़कर हाथ में लिया हुआ जल भूमि पर छोड़ दें)

॥ अथ करन्यासः ॥

ॐ एकवीरायै अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः ॥१॥ (तर्जनी अँगुलियों से दोनों हाथों के अँगूठों का स्पर्श करें)

ॐ महामायायै तर्जनीभ्यान्नमः ॥२॥ (अँगूठों से तर्जनी अँगुलियों का स्पर्श करें)

ॐ पार्वत्यै मध्यमाभ्यान्नमः ॥३॥ (अँगूठों से मध्यमा अँगुलियों का स्पर्श करें)

ॐ गिरीश प्रियायै अनामिकाभ्यान्नमः ॥४॥ (अँगूठों से अनामिका अँगुलियों का स्पर्श करें)

ॐ गौर्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥५॥ (अँगूठों से कनिष्ठिका अँगुलियों का स्पर्श करें)

ॐ करालिन्यैकरतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥६॥ (दोनों हाथों की हथेलियों एवं पृष्ठ भागों का परस्पर स्पर्श)

॥ अथ षडङ्गन्यासः ॥

ॐ एकवीरायै हृदयाय नमः ॥ (दोनों हाथों की अँगुलियों से हृदय का स्पर्श करें)

ॐ महामायायै शिरसे स्वाहा ॥ (दोनों हाथों की अँगुलियों से सिर का स्पर्श करें)

ॐ पार्वत्यै शिखायै वषट् ॥ (दोनों हाथों की अँगुलियों से चोटी का स्पर्श करें)

ॐ गिरीश प्रियायै कवचाय हुम् ॥ (दाहिने हाथ की अँगुलियों से बायें कन्धे का एवं बायें हाथ की अँगुलियों से दायें कन्धे का स्पर्श करें)

ॐ गौर्यै नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ (दाहिने हाथ की अनामिका, मध्यमा एवं तर्जनी अँगुली से दोनों आँखों एवं ललाट का स्पर्श करें)

ॐ करातिन्यै अस्त्राय फट् ॥ (दाहिने हाथ को सिर की बायीं ओर से आगे की ओर ले जाकर तर्जनी तथा मध्यमा अँगुलियों से बायें हाथ की हथेली पर ताली बजायें)

अथ प्राणायामः

ॐ भूः ॐ भुवः उों स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धी महि धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ आपोज्योतिरसोऽमृतंब्रह्म भूर्भवः स्वरोम्॥

॥ अथ ध्यानम् ॥

बालार्क मण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम्। पाशाङ्कुशशरांश्चापं धारयन्तीं शिवां भजे ॥१॥
ॐ अर्धेन्दुमौलिममलाममराभिवन्द्यामम्भोजपाश सृणिरक्तकपाल हस्ताम्।
रक्ताङ्गराग रशनाऽऽभरणां त्रिनेत्रां ध्याय्येच्छिवस्यवनितां मधुविह्वलाङ्गीम् ॥२॥

॥ अथ मूलमन्त्रम् ॥

ॐ बीज त्रयायै विद्महे तत्प्रधानायै धीमहि तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् ॥३बार॥

॥जपार्थमूलम्॥

ॐ श्रीं श्रीं ॐ ॐ ह्रीं श्रीं श्रीं भवानी हुं फट् स्वाहा ॥

अथात्र भवानी सहस्रनामस्तुतिः

ॐ महाविद्या जगन्माता, महालक्ष्मीः शिव-प्रिया।
विष्णुमाया शुभा शान्ता सिद्धा सिद्धसरस्वती ॥१॥
क्षमा कान्तिः प्रभा ज्योत्स्ना, पार्वती सर्वमङ्गला।
हिंगुला चण्डिका दान्ता, पद्मा लक्ष्मीर्हरिप्रिया ॥२॥
त्रिपुरानन्दिनी नन्दा, सुनन्दा सुरवन्दिता।
यज्ञ विद्या महामाया, वेदमाता सुधाधृतिः ॥३॥
प्रीतिप्रिया प्रसिद्धा च, मृडानी विन्ध्यवासिनी।
सिद्धविद्या महाशक्तिः, पृथ्वी नारद-सेविता ॥४॥
पुरुहूतप्रिया कान्ता, कामिनी पद्म-लोचना।
प्रह्लादिनी महामाता, दुर्गा दुर्गति-नाशिनी ॥५॥
ज्वालामुखी सुगोत्रा च, ज्योतिः कुमुदहासिनी।
दुर्गमा दुर्लभा-विद्या, स्वर्गतिः पुरवासिनी ॥६॥
अपर्णा शाम्बरीमाया, मदिरा मृदुहासिनी।
कुलवागीश्वरी नित्या, नित्यक्लिन्ना कृशोदरी ॥७॥

कामेश्वरी च नीला च, भीरुण्डा वह्निवासिनी।
लम्बोदरी महाकाली, विद्या विद्येश्वरी तथा ॥८॥
नरेश्वरी च सत्या च, सर्वसौभाग्यवर्धिनी
सङ्कर्षिणी नारसिंही, वैष्णवी च महोदरी ॥६॥
कात्यायनी च चम्पा च, सर्वसम्पत्तिकारिणी।
नारायणी महानिद्रा, योगनिद्रा प्रभावती ॥१०॥
प्रज्ञापारमिता प्रज्ञा, तारा, मधुमती मधु।
क्षीरार्णवसुधाहाला, कालिका सिंहवाहना ॥११॥
ओङ्कारा च सुधाकारा, चेतना कोपनाकृतिः।
अर्ध बिन्दुधरा धीरा, विश्वमाता कलावती ॥१२॥
पद्मावती सुवस्त्रा च, प्रबुद्धा च सरस्वती।
कुण्डासना जगद्धात्री, बुद्धमाता जिनेश्वरी ॥१३॥
जिनमाता जिनेन्द्रा च, शारदा हंसवाहना।
राज्यलक्ष्मीर्वषट्कारा, सुधाकारा सुधात्मिका ॥१४॥
राजनीतिस्त्रयीवार्ता, दण्डनीतिः क्रियावती।
सद्भूतिस्तारिणी श्रद्धा, सद्गतिः सत्परायणा ॥१५॥
सिन्धुर्मन्दाकिनी गङ्गा, यमुना च सरस्वती।
गोदावरी विपाशा च, कावेरी च शतह्रदा ॥१६॥

सरयुश्चन्द्रभागा च, कौशिकी गण्डकी शुचिः।
नर्मदाऽकर्मनाशा च, चर्मण्वत्यऽथ देविका ॥१७॥

वेत्रवती वितस्ता च, वरदा नरवाहना।
सती पतिव्रता साध्वी, सुचक्षुः कुण्डवासिनी ॥१८॥

एकचक्षुः सहस्राक्षी, सुश्रेणिर्भगमालिनी।
सेनाश्रेणिः पताका च, सुव्यूहा युद्ध कांक्षिणी ॥१९॥

पताकिनी दयारम्भा, विपञ्ची पञ्चमप्रिया।
परापर कलाकान्ता, त्रिशक्तिर्मोक्षदायिनी ॥२०॥

ऐन्द्री माहेश्वरी ब्राह्मी, कौमारी कुलवासिनी।
इच्छा भगवती शक्तिः, कामधेनुः कृपावती ॥२१॥

वज्रायुधा वज्रहस्ता, चण्डी चण्डपराक्रमा।
गौरी सुवर्णवर्णा च, स्थिति-संहार-कारिणी ॥२२॥

एकाऽनेका महेज्या च, शतबाहुर्महाभुजा।
भुजङ्गभूषणा भूषा, षट्चक्र-क्रमवासिनी ॥२३॥

षट्चक्र-भेदिनी शूरा, कायस्था कायवर्जिता।
सुस्मिता सुमुखी क्षामा, मूलप्रकृतिरीश्वरी ॥२४॥

अजा च बहुवर्णा च, पुरुषार्थ-प्रवर्तिनी।
रक्ता नीला सिता श्यामा, कृष्णा पीता च कर्बुरा ॥२५॥
क्षुधा तृष्णा जरा वृद्धा, तरुणी करुणालया।
कला काष्ठा मुहूर्ता च, निमेषा कालरूपिणी ॥२६॥
सुकर्ण-रसना-नासा, चक्षुः स्पर्शवती रसा।
गन्धप्रिया सुगन्धाच, सुस्पर्शा च मनोगतिः ॥२७॥
मृगनाभि मृगाक्षी च, कर्पूरामोदधारिणी।
पद्मयोनिः सुकेशी च, सुलिङ्गा भगरूपिणी ॥२८॥
योनिमुद्रा महामुद्रा, खेचरी खगगामिनी।
मधुश्रीर्माधवी-वल्ली, मधुमत्ता मदोद्धता ॥२९॥
मातङ्गी शुकहस्ता च पुष्पबाणेक्षुचापिनी।
रक्ताम्बरधरा क्षीबा रक्त पुष्पावतंसिनी ॥३०॥
शुभ्राम्बरधरा धीरा, महाश्वेता वसुप्रिया।
सुवेणी पद्महस्ता च, मुक्ताहारविभूषणा ॥३१॥
कर्पूरामोदनिःश्वासा, पद्मिनी पद्ममन्दिरा
खड्गिनी चक्रहस्ता च, भुसुण्डी परिघायुधा ॥३२॥

चापिनी पाशहस्ता च, त्रिशूलवरधारिणी।
सुबाणा शक्तिहस्ताच, मूयरवरवाहना ॥३३॥
वरायुधधरा वीरा, वीरपानमदोत्कटा।
वसुधा वसुधारा च, जया शाकम्भरी शिवा ॥३४॥
विजया च जयन्ती च, सुस्तनी शत्रुनाशिनी।
अन्तर्वत्नी वेद-शक्ति,र्वरदा वरधारिणी ॥३५॥
शीतला च सुशीला च, बाल-ग्रह-विनाशिनी।
कौमारी वसुपर्णा च, कामाख्या कामवन्दिता ॥३६॥
जालन्धर-धराऽनन्ता, कामरूपनिवासिनी।
कामबीजवती सत्या, सत्यधर्मपरायणा ॥३७॥
स्थूलमार्गस्थिता सूक्ष्मा, सूक्ष्मबुद्धिप्रबोधिनी।
षट्कोणा च त्रिकोणा च, त्रिनेत्रा वृषभध्वजा ॥३८॥
वृषप्रिया वृषारूढा, महिषासुरघातिनी।
शुम्भदर्पहरा दीप्ता, दीप्तपावकसन्निभा ॥३९॥
कपालभूषणा काली, कपाल-माल-धारिणी।
कपाल-कुण्डला दीर्घा शिवदूती घनध्वनिः ॥४०॥

सिद्धिदा बुद्धिदा नित्या, सत्यमार्ग-प्रबोधिनी।
कम्बुग्रीवा वसुमतीच्छत्रच्छाया कृतालया.॥४१॥
जगद्गर्भा कुण्डलिनी, भुजगाकारशायिनी।
प्रोल्लसत्सप्त पद्मा च, नाभिनालमृणालिनी॥४२॥
मूलाधारा निराकारा, वह्निकुण्डकृतालया।
वायु कुण्डसुखासीना, निराधारा निराश्रया॥४३॥
श्वासोच्छवासगति जींवा, ग्राहिणी वह्निसंश्रया।
वल्लीतन्तु समुत्थाना, षड्रसास्वादलोलुपा॥४४॥
तपस्विनी तपः सिद्धिस्तपसः सिद्धिदायिनी।
तपो निष्ठा तपोयुक्ता, तापसी च तपः प्रिया॥४५॥
सप्त धातुमयी मूर्तिः, सप्तधात्वन्तराश्रया।
देहपुष्टिर्मनः पुष्टिरन्नपुष्टिर्बलोद्धता॥४६॥
औषधिर्वैद्यमाता च, द्रव्यशक्तिः प्रभावती।
वैद्या वैद्यचिकित्सा च, सुपथ्या रोगनाशिनी॥४७॥
मृगया मृगमांसादा, मृगत्वङ्मृगलोचना।
वागुरा बन्धरूपा च, बधरूपा वधोद्धता॥४८॥

वन्दी बन्दिस्तुताकारा कारावन्धविमोचिनी।
शृंखला खलहा विद्युद्, दृढबन्धविमोचिनी ॥४९॥
अम्बिकाऽम्बालिका चाम्बा स्वक्षा साधुजनार्चिता।
कौलिकी कुलविद्या च, सुकुला कुलपूजिता ॥५०॥
कालचक्रभ्रमा भ्रान्ता, विभ्रमा भ्रमनाशिनी।
वात्याली मेघमाला च, सुवृष्टिः सस्य-वर्धिनी ॥५१॥
अकारा च इकारा च, उकारैंकार-रूपिणी।
ह्रीङ्कारी बीजरूपा च, क्लीङ्काराम्बरवासिनी ॥५२॥
सर्वाक्षरमयी शक्तिरक्षरा वर्णमालिनी।
सिन्दूरारुणवर्णा च, सिन्दूर तिलकप्रिया ॥५३॥
वश्या च वश्यबीजा च, लोक वश्यविभाविनी।
नृपवश्या नृपैः सेव्या, नृपवश्यकरी-क्रिया ॥५४॥
महिषी नृपमान्या च, नृमान्या नृप-नन्दिनी।
नृपधर्ममयी धन्या, धन-धान्य-विवर्धिनी ॥५५॥
चतुर्वर्णमयी मूर्तिश्चतुर्वर्णैः सुपूजिता।
सर्वधर्ममयी सिद्धिश चतुराश्रम वासिनी ॥५६॥

ब्राह्मणी क्षत्रिया वैश्या, शूद्रा चाऽवर वर्णजा

वेदमार्गरता यज्ञा, वेदविश्वविभाविनी ॥५७॥

अस्त्रशस्त्रमयी विद्या, वरशस्त्रास्त्रधारिणी ।

सुमेधा सत्यमेधा च, भद्रकाल्याऽपराजिता ॥५८॥

गायत्री सत्कृतिः सन्ध्या, सावित्री त्रिपदाश्रया ।

त्रिसन्ध्या त्रिपदा धात्री, सुपर्वा सामगायनी ॥५९॥

पाञ्चाली बालिका बाला, बालक्रीडा सनातनी,

गर्भाधारधरा शून्या, गर्भाशय-निवासिनी ॥६०॥

सुरारिघातिनी कृत्या, पूतना च तिलोत्तमा ।

लज्जा रसवती नन्दा, भवानी पाप-नाशिनी ॥६१॥

पट्टाम्बरधरा गीतिः, सुगीतिर्ज्ञान-लोचना ।

सप्तस्वरमयी तन्त्री, षड्जमध्यमदैवता ॥६२॥

मूर्च्छना ग्राम-संस्थाना, स्वस्था, स्वस्थान-वासिनी ।

अट्टाट्टहासिनी प्रेता, प्रेतासन-निवासिनी ॥६३॥

गीत-नृत्य-प्रिया कामा, तुष्टिदा पुष्टिदाऽक्षया ।

निष्ठा सत्य-प्रिया प्रख्या, लोकेशी च सुरोत्तमा ॥६४॥

सुविषा ज्वालिनी ज्वाला, विश्वमोहार्त्तिनाशिनी।
विषारिर्नागदमनी, कुरुकुल्याऽमृतोद्भवा ॥६५॥
भूतभीतिहरा रक्षा, भूतावेशविनाशिनी।
रक्षोघ्नी राक्षसी रात्रि,दीर्घनिद्रा निवारिणी ॥६६॥
चन्द्रिका चन्द्रकान्तिश्च, सूर्यकान्तिर्निशाचरी।
डाकिनी शाकिनी शिष्या, हाकिनी चक्रवाकिनी ॥६७॥
सिता सित-प्रिया स्वङ्गा, सुकुला वनदेवता।
गुरुरूप-धरा गुर्वी, मृत्युर्मारी विशारदा ॥६८॥
महामारी विनिद्रा च, तन्द्रा मृत्यु-विनाशिनी।
चन्द्रमण्डलसङ्काशा, चन्द्रमण्डलवासिनी ॥६९॥
अणिमादि-गुणोपेता, सुस्पृहा कामरूपिणी।
अष्टसिद्धिप्रदा प्रौढा, दुष्ट-दानवघातिनी ॥७०॥
अनादिनिधना पुष्टिश्चतुर्बाहुश्चतुर्मुखी।
चतुः समुद्रशयना, चतुर्वर्ग-फल-प्रदा ॥७१॥
काश पुष्पप्रतीकाशा, शरत्कुमुदलोचना।
भूता भव्या भविष्याच, शैलजा शैलवासिनी ॥७२॥

वागमार्गरता वामा, शिववामाङ्गवासिनी।
वामाचारप्रिया तुष्टिर्लोपामुद्रा-प्रबोधिनी ॥७३॥
भूतात्मा परमात्मा च, भूत-भाव विभाविनी।
मङ्गला च सुशीला च, परमार्थ-प्रबोधिनी ॥७४॥
दक्षिणा दक्षिणामूर्तिः सुदीक्षा च हरिप्रसुः।
योगिनी योगयुक्ता च, योगाङ्गा ध्यानशलिनी ॥७५॥
योगपट्टधरा मुक्ता, मुक्तानां परमागतिः।
नारसिंही सुजन्मा च, त्रिवर्ग फल-दायिनी ॥७६॥
धर्मदा धनदा चैका, कामदा मोक्षदा द्युतिः।
साक्षिणी क्षणदा दक्षा, दक्षजा कोटिरूपिणी ॥७७॥
क्रतुः कात्यायनी स्वच्छा, स्वच्छन्दा च कविप्रिया।
सत्यागमा बहिःस्था च, काव्य-शक्तिः कवित्वदा ॥७८॥
मैना पुत्री सतीमाता, मैनाकभगिनी तडित्।
सौदामिनी स्वधामा च, सुधामा धामशालिनी ॥७९॥
सौभाग्य-दायिनी द्यौश्च, सुभगा द्युतिवर्धिनी।
श्रीः कृत्ति वसना चैव, कङ्काली कलिनाशिनी ॥८०॥

रक्तबीजवधोद्यता, सुतन्तुर्बीज सन्ततिः।
जगज्जीवा जगद्बीजा, जगत्-त्रय-हितैषिणी ॥८१॥
चामीकररुचिश्चान्द्री, साक्षाद्या षोडशीकला।
यत्तत्पदानुबन्धा च, यक्षिणी धनदाऽर्चिता ॥८२॥
चित्रिणी चित्रमाया च, विचित्रा भुवनेश्वरी।
चामुण्डा मुण्डहस्ता च, चण्डमुण्डबधोद्धुरा ॥८३॥
अष्टम्येकादशी पूर्णा, नवमी च चतुर्दशी।
अमा कलशहस्ता च, पूर्ण कुम्भपयोधरा ॥८४॥
अभीरुर्भैरवी भीरा, भीमा त्रिपुरभैरवी।
महारुण्डा च रौद्री च, महाभैरव-पूजिता ॥८५॥
निर्मुण्डा हस्तिनी चण्डा, कराल-दशनानना।
कराला विकराला च, घोरा घुर्घुरनादिनी ॥८६॥
रक्तदन्तोर्ध्वकेशी च, बन्धूककुसुमारुणा।
कादम्बरी पटासा च, काश्मीरी कुङ्कुम-प्रिया ॥८७॥
क्षान्तिः बहुसुवर्णा च, मतिर्बहु सुवर्णदा।
मातङ्गिनी वरारोहा, मत्तमातङ्गगामिनी ॥८८॥

हंसा हंसगतिर्हंसी, हंसोज्ज्वल शिरोरुहा।
पूर्णचन्द्रमुखी श्यामा, स्मितास्या श्यामकुन्तला ॥८९॥
मषी च लेखनी लेखा, सुलेखा लेखक-प्रिया।
शंखिनी शंख-हस्ता च, जलस्था जल-देवता ॥९०॥
कुरुक्षेत्रवनिः काशी, मथुरा कांच्यऽवन्तिका।
अयोध्या द्वारिका माया, तीर्था तीर्थकरप्रिया ॥९१॥
त्रिपुष्कराऽप्रमेया च, कोशस्था कोश-वासिनी।
कौशिकी तु कुशावर्ता, कोशाम्बी कोश-वर्धिनी ॥९२॥
कोशदा पद्मकोशाक्षी, कुसुमा कुसुम-प्रिया।
तोतला च तुलाकोटिः, कूटस्था कोटराश्रया ॥९३॥
स्वयम्भूश्च सुरूपाश्च, स्वरूपा पुण्य-वर्धिनी।
तेजस्विनी सुभिक्षा च, बलदाबल-दायिनी ॥९४॥
महाकोशी महावार्ता, बुद्धिः सदसदात्मिका।
महाग्रहहरा सौम्या, विशोका शोक-नाशिनी ॥९५॥
सात्त्विकी सत्त्वसंस्था च, राजसी च रजोवृता।
तामसी च तमोयुक्ता, गुणत्रय-विभाविनी ॥९६॥

अव्यक्ता व्यक्तरूपा च, वेद विद्या च शाम्भवी।
शङ्करः कल्पिनी कल्पा, मनः सङ्कल्पसन्ततिः ॥६७॥
सर्वलोकमयी शक्तिः, सर्वश्रवणगोचरा।
सर्वज्ञानवती वाञ्छा, सर्वतत्त्वावबोधिका ॥६८॥
जागृतिश्च सुषुप्तिश्च, स्वप्नावस्था तुरीयका।
सत्वरा मन्दरा मन्दा, मदिरा-मोदधारिणी ॥६६॥
पानभूमिः पानपात्र, पानदान करोद्यता।
आघूर्णारुणनेत्रा च, किञ्चिदव्यक्तभाषिणी ॥१००॥
आशापूरा च दीक्षा च, दक्षा दीक्षितपूजिता।
नागवल्ली नागकन्या, भोगिनी भोग-वल्लभा ॥१०१॥
सर्वशास्त्रमयी-विद्या, सुस्मृतिः धर्मवादिनी।
श्रुतिः स्मृतिधरा ज्येष्ठा, श्रेष्ठा पातालवासिनी ॥१०२॥
मीमांसा तर्कविद्या च, सुभक्तिर्भक्त-वत्सला।
सुनाभिर्यातना जातिर्गम्भीराऽभाववर्जिता ॥२०३॥
नागपाशधरा मूर्तिरगाधा नाग-कुण्डला।
सुचक्रा चक्रमध्यस्था, चक्रकोण निवासिनी ॥१०४॥

सर्वमन्त्रमयी विद्या, सर्वमन्त्राक्षरावलिः।
मधुस्रवा स्रवन्ति च भ्रामरी भ्रमरालका ॥१०५॥
मातृमण्डलमध्यस्था, मातृमण्डलवासिनी।
कुमार-जननी क्रूरा, सुमुखी ज्वर-नाशिनी ॥१०६॥
अतीता विद्यमाना च, भाविनी प्रीति-मञ्जरी।
सर्वसौख्यवतीयुक्तिराहार परिणामिनी ॥१०७॥
निधानापञ्चभूतानां, भवसागर तारिणी।
अक्रूरा च ग्रहवती, विग्रहा ग्रहवर्जिता ॥१०८॥
रोहिणी भूमिगर्भा च, कालभूः काल-वर्जिता।
कलङ्क-रहिता-नारी, चतुषष्ट्यभिधावती ॥१०९॥
जीर्णा च जीर्णवस्त्रा च, नूतना नववल्लभा।
अजरा नियतिः प्रीति, रतिरागविवर्धिनी ॥११०॥
पञ्चवातगतिर्भिन्ना, पञ्चश्लेष्मा शयाधरा।
पञ्चपित्तवती शक्तिः पञ्चस्थानविभाविनी ॥१११॥
ऋतुमती कामवती, बहिः प्रस्रविणी त्र्यहा।
रजः शुक्रधरा शक्तिर्जरायुर्गर्भधारिणी ॥११२॥

त्रिकालज्ञा त्रिलिङ्गा च, त्रिमूर्तिस्त्रिपुरवासिनी।
अरागा शिवतत्त्वा च, कामतत्त्वानुरागिणी ॥११३॥
प्राच्यऽवाची प्रतीची दिगुदीचीदिग्विदिग्दिशा।
अहंकृतिरहङ्कारा, बालमाया बलिप्रिया ॥११४॥
स्रुक्स्रुवा सामधेनी च, सुश्रद्धा श्राद्धदेवता।
माता मातामही तृप्तिः, पितृमाता पितामही १२१५॥
स्नुषा दौहित्रिणी पुत्री, पौत्री नप्त्री शिशुप्रिया।
स्तनदास्तनधारा च, विश्वयोनिः स्तनधयी ॥१२६॥
शिशूत्सङ्गधरा दोला, दोला क्रीडाभिनन्दिनी।
उर्वशी कदली केका, विशिखा शिखिवर्तिनी ॥११७॥
खट्वाङ्गधारिणी खट्वा, बाण पुंखानुवर्तिनी।
लक्ष्यप्राप्तिः काललक्ष्या, लक्ष्या च शुभलक्षणा। ॥११८॥
वर्तिनी सुपथाचारा, परिखा च खनिर्वृतिः।
प्राकारवलया वेला, मर्यादा च महोदधौ ॥११९॥
पोषणी-शोषणी-शक्तिर्दीर्घकेशी सुलोमशा।
ललिता मांसला तन्वी, वेदवेदाङ्गधारिणी ॥१२०॥

नरासृक्पानमत्ता च, नरमुण्डास्थिभूषणा।
अक्षक्रीडारतिः शारी, शारिका शुकभाषिणी ॥१२१॥
शाम्बरी-गारुडी-विद्या, वारुणी वरुणार्चिता।
वाराही तुण्डहस्ता च दंष्ट्रोधृत वसुन्धरा ॥१२२॥
मीनमूर्तिर्धरा मूर्त्ता, वदान्या प्रतिमाश्रिया।
अमूर्ता निधिरूपाच, शालिग्रामशिला शुचिः ॥१२३॥
स्मृतिः संस्काररूपाच, सुसंस्कारा च संस्कृतिः।
प्राकृता देशभाषा च, गाथा गीति प्रहेलिका ॥१२४॥
इडा च पिङ्गला पिङ्गा, सुषुम्ना सूर्यवाहिनी।
शशिस्रवा च तालुस्था, काकिनी मृतजीविनी ॥१२५॥
अणुरूपा वृहद्रूपा, लघुरूपा गुरुः स्थिरा।
स्थावरा जङ्गमां-देवी, कृत-कर्म-फलप्रदा ॥१२६॥
विषयाक्रान्तदेहा च, निर्विशेषा जितेन्द्रिया।
विश्वरूपा चिदानन्दा, परब्रह्मप्रबोधिनी ॥१२७॥
निर्विकारा च निर्वैरा, विरतिः सत्यवर्धिनी।
पुरुषाऽज्ञानभिन्ना च, क्षान्तिः कैवल्यदायिनी ॥१२८॥

विविक्तसेविनी प्रह्वा, जनयित्री बहुश्रुतिः।
निरीहा च समस्तैका, सर्वलोकैकसेविता ॥१२९॥
सेवा सेवा-प्रिया सेव्या, सेवा-फल-विवर्धिनी।
कलौ कल्कि प्रिया काली, दुष्टम्लेच्छविनाशिनी ॥१३०॥
प्रत्यञ्चा च धनुर्यष्टिः, खड्गधारा दुरानतिः।
अश्वप्लुतिश्च वल्गा च, सृणिः सन्मृत्युवारणा ॥१३१॥
वीरभूर्वीरमाता च, वीरसूर्वीरनन्दिनी।
जयश्रीर्जयदीक्षा च, जयदा जयवर्धिनी ॥१३२॥
सौभाग्यसुभगाकारा, सर्व-सौभाग्य-वर्धिनी।
क्षेमङ्करी सिद्धिरूपा, सत्कीर्तिः पथिदेवता ॥१३३॥
सर्वतीर्थमयीमूर्तिः सर्वदेवमयी प्रभा।
सर्वसिद्धिप्रदा शक्तिः, सर्वमङ्गलमङ्गला ॥१३४॥

अथ श्री भवानी सहस्रनाम माहात्म्यम्

पुण्यं सहस्रनामेदं, शिवायाः शिवभाषितम्। यः पठेत्प्रातरुत्थाय, शुचिर्भूत्वा समाहितः ॥१॥
यश्चापि शृणुयान्नित्यं नरो निश्चलमानसः। एककालं द्विकालं वा, त्रिकालं श्रद्धयान्वितः ॥२॥
सर्व दुःख विनिर्मुक्तो, धन धान्य समन्वितः। तेजस्वी बलवाञ्छूरः, शोक रोग विवर्जितः ॥३॥
यशस्वी कीर्तिमान्धन्या, सुभोगलोकपूजितः। रूपवान्गुणसम्पन्ना, प्रभावीर्य समन्विता ॥४॥
श्रेयांसि लभते नित्यं, निश्चलां च शुभां श्रियम्। सर्वपाप विनिर्मुक्तो, लोभ क्रोध विवर्जितः ॥५॥
नित्यं बन्धु सुतैदरैः, पुत्रपोत्रैर्महोसवैः। नन्दितः सेवितोभृत्यैर्बहुभिः शुचिमानसैः ॥६॥
विद्यानां पारगो विप्रः, क्षत्रियो विजयी रणे। वैश्यस्तु धनलामाढ्यः, शूद्रः सुखमवाप्नुयात् ॥७॥
पुत्रार्थी लभते पुत्रं, धनार्थी विपुलं धनम्। इच्छा कामान्तुकामार्थी, धर्मार्थी धर्ममक्षयम् ॥८॥
कन्यार्थी लभते कन्यां, रूपशील गुणान्विताम्। क्षेत्रं च बहुसस्यंस्याद्, गावस्तु बहुदुग्धदाः ॥९॥
नाऽशुभं नाऽऽपदस्तस्य, न भयं नृप शत्रुतः। जायते नाऽशुभाद् बुद्धिर्लभते कुल धुर्यताम् ॥१०॥
न बाधन्ते ग्रहास्तस्य, न रक्षांसि न पन्नगाः। न पिशाचाः न डाकिन्या, भूतभव्यन्तर्जम्बुकाः ॥११॥
बालग्रहाभिभूतानां, बालानां शान्तिकारकम्। द्वन्द्वानां प्रीति भेदे च, मैत्रीकरणमुत्तमम् ॥१२॥
लौहपाशैर्दृढैर्बद्धो, बद्धो वेश्मनि दुर्गमे। तिष्ठन्शृण्वन्पठन्मर्त्यो, मुच्यते नात्र संशयः ॥१३॥
न दाराणां न पुत्राणां, न बन्धूनां न मित्रजम्। पश्यन्ति ते न शोकं हि, वियोगं चिरजीविताम्। ॥१४॥

अन्धस्तु लभते दृष्टि, चक्षुरोगैर्न बाध्यते। बधिरा श्रुतिमवाप्नोति, मूको वाचं शुभां नरः ॥१५॥
पतद्गर्भा च या नारी, स्थिरगर्मा प्रजायते। स्रावणी बद्धगर्भा च, सुखमेव प्रसूयते ॥१६॥
कुष्ठिनाः शीर्ण देहा ये, गत केश नख त्वचाः। पठनाच्छवणाद्वपि, दिव्य काया भवन्ति ते ॥१७॥
ये पठन्ति सदा मर्त्याः, शुचिष्मंतो जितेन्द्रियाः| अपुत्राः प्राप्नयुः पुत्राञ्छृण्वन्तोपि न संशयः ॥१८॥
महाव्याधिपरिग्रस्तास्तप्ता ये विविधैर्ज्वरैः। भूताभिषंगसंघातैश्चातुर्थिक तृतीयकैः ॥१९॥
अन्यैश्च दारुणैःरोगैः, पीड्यमानाश्च मानवाः। गतबाधा प्रजायन्ते, तैर्मुक्ता नात्रसंशयः ॥२०॥
श्रुति ग्रन्थधरो बालो, दिव्यवादी कवीश्वरः। पठनाच्छ्रवणाद्वापि, भवत्येव न संशयः ॥२१॥
अष्टम्यां वा चतुर्दश्यां, नवम्यां चैक चेतसः। ये पठन्ति सदा मर्त्याः, न ते वै दुःख भाजनाः ॥२२॥
नवरात्रं जिताहारो, दृढ़ भक्तिर्जितेन्द्रियाः। चण्डिकायतने विद्वान्, शुचिमान्मूर्तिसन्निधौ ॥२३॥
एकाकी तु शतावृत्या, पठन्धीरश्च निर्भयः। साक्षाद् भगवती तस्मै, प्रयच्छेदीप्सितं फलम् ॥२४॥
सिद्धपीठे, गिरौ रम्ये, सिद्धक्षेत्रे, सुरालये। पठनात्साधकस्याशु, सिद्धिर्भवति वाञ्छिता ॥२५॥
दशवर्तं पठेद्यस्तु भूमिशायीनरः शुचिः। स्वप्नेमूर्तिमयीं देवीं, वरदां सोऽपि पश्यति ॥२६॥
कवित्वं संस्कृते तेषां शास्त्राणां व्याकृतौ स्वतः। शक्तिः प्रोन्मील्यते शास्त्रेष्वनधीतेषु भारती ॥२७॥
आवर्तन सहस्रैर्ये, पठन्ति पुरुषोत्तमाः। ते सिद्धाः सिद्धिदालोके, शापानुग्रहणे क्षमाः ॥२८॥
नखरागशिरोरत्न, द्विगुणीकृत रोचिषः। प्रयच्छन्तश्च सर्वस्वं, सेवन्ते तान्महीश्वराः ॥२९॥
रोचना लिखितं भूर्जे, कुङ्कुमेन शुभे दिने। धारयेद्यन्त्रितं देहे पूजयित्वा कुमारिकाम् ॥३०॥

विप्रांश्चवर नारींश्च, धूपैः कुसुमचन्दनैः। खीरखण्डाज्यभोजैश्च, पूजयित्वा सुभूषिताः ॥३१॥
बधनन्तिये महारक्षां, बालानां च विशेषतः। भवन्ति नृप पूज्यास्ते कीर्तिभाजो यशस्विनः ॥३२॥
शत्रुतो नाभयन्तेषां, दुर्जनेभ्यो न राज्यतः। न च दाराभिचारेभ्यो न दरिद्रयं स पश्यति ॥३३॥
महार्णवि महानद्यां, स्थितेऽपि न भीः क्वचित्। रणेद्यूते विवादे च. विजयं प्राप्नुवन्ति ते ॥३४॥
नृपाश्च वश्यतां यान्ति, नृपमान्याश्चये नराः। सर्वत्र पूजितालोके, बहुमान पुरःसराः ॥३५॥
लिखितं मूर्ध्नि कण्ठे वा, धारयेद् यो रणे शुचिः। शतधायुध्यमानन्तु, प्रतियोधा न पश्यति ॥३६॥
केतौ वा द्वन्द्वभौयेषां, तिष्ठेद् वै लिखितं रणे। मायासैन्य परिग्रस्तां. कां दिशी कान्हतौजसाः ॥३७॥
विचेतान विमूढांश्च शस्त्रकृत्परिवर्जितान्। निर्जित्य शत्रु संघातान्, लभंते विजयं ध्रुवम् ॥३८॥
नाभिचारो न शापाश्च, बाणवीरादिकीलनम्। डाकिनी पूतना कृत्या महामारी च शाकिनी ॥३९॥
भूतगः प्रेताः पिशाचाश्च, रक्षांसि व्यन्तरादयाः। न वसन्ति गृहे देहे. लिखितं यत्र तिष्ठति ॥४०॥
नशस्त्रानलतोयोघाद्, भयं तस्योपजायते। दुर्वृत्तानां च पापानां, बलहानिकरं परम् ॥४१॥
मन्दुरा करिशालासु, गवां गोष्ठे समाहितः। पठेत्तद् दोषशान्त्यर्थं, कूटं कपटनाशिनी ॥४२॥
यमदूतान्न पश्यन्ति, न ते निरययातनाम्। प्राप्नुवन्त्यक्षयं प्रांते. शिवलोकं सनातनम् ॥४३॥
सर्वा बाधासु घोरासु, सर्व दुःख निवारणम् सुमङ्गलकरं स्वर्ग्यं, पठितव्यं समाहितैः ॥
श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं महत् ॥४४॥
पुण्यं सहस्रनामेदमम्बायाः रुद्रभाषितम्। चतुवर्गप्रदं सत्यं, नन्दिकेन प्रकाशितम् ॥४५॥

नातः परतरो मन्त्रो, नातः परतरः स्तवा। नातः परतरः विद्या तीर्थं नातः परात्परम् ॥४६॥
ते धन्याः कृतपुण्यास्ते, ते एव भुवि पूजिताः। एकभावं मुदा नित्यं, येऽर्चयन्ति महेश्वरीम् ॥४७॥
देवतानां देवता या ब्रह्माद्यैर्या च पूजिता। भूयात्सा वरदा लोके, साधूनां विश्वमङ्गला ॥४८॥
एतामेवं पुराऽऽराध्य, विद्यां त्रिपुरभैरवीम्। त्रैलोक्य मोहिनी रूपमकार्षीद्भगवान् हरिः ॥४९॥

इति श्री रुद्रयामले तन्त्रेनन्दिकेश्वर संवादे महाप्रभावो
भवानी सहस्रनाम माहात्म्यं सम्पूर्णम् ॥

❖

अथ श्री इन्द्राक्षी स्तोत्रम्

॥ आदौ विनियोगः ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षी स्तोत्र मन्त्रस्य पुरन्दर ऋषिः, श्री इन्द्राक्षी भगवती देवता, अनुष्टुप् छन्दः, लक्ष्मी बीजम्, भुवनेश्वरी शक्तिः, माहेश्वरी कीलकम्, गायत्री सावित्री सरस्वती कवचं, आत्मनो वाङ्मनः कायोपार्जित पाप निवारणार्थं सकल कामना सिद्ध्यर्थं च पाठे विनियोगः ॥

अथ करन्यासः ॥ ॐ लक्ष्म्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ ॐ भुवनेश्वर्यै तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ माहेश्वर्यै मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ वज्रहस्तायै अनामिकाभ्यां नमः । ॐ सहस्रनयनायै कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ इन्द्राक्षी भगवत्यै करतलकर-पृष्ठाभ्यां नमः ॥

अथ षडङ्गन्यासः ॥ ॐ लक्ष्म्यै हृदयाय नमः॥ ॐ भुवनेश्वर्यै शिरसे स्वाहा ॥ ॐ माहेश्वर्यै शिखायै वषट्॥ ॐ वज्रहस्तायै कवचाय हुम् ॥ ॐ सहस्रनयनायै नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ इन्द्राक्षी भगवत्यै अस्त्राय फट् ॥

॥ अथ रक्षार्थ दिग्बन्धनम् ॥

पूर्वस्यां पातु मां ब्राह्मी, चाग्नेयां तु महेश्वरी । कौमारी पातु याम्ये वै, नैर्ऋत्यां पातु भैरवी ॥१॥
पश्चिमे पातुवाराही, वायव्ये नारसिंहिका । कालरात्रीरुदीच्यां च, ऐशान्यां सर्वशक्तिधृक् ॥२॥
ऊर्ध्वं मे भैरवी पातु, चाधस्यां विन्ध्यवासिनी । यद्र्यत् तु विषमं स्थानं, तत्तद्र रक्षतु चेश्वरी ॥३॥

॥ अथ ध्यानम् ॥

इन्द्राक्षीं द्विभुजां देवीं, पीतवस्त्रधरां शिवाम्। वामे हस्ते वज्रधरां, दक्षिणे चाऽभयप्रदाम् ॥१॥
सहस्रनेत्रां सूर्याभां, नानाऽलङ्कारभूषिताम्। प्रसन्न वदनां नित्यमप्सरोगण सेविताम् ॥२॥
श्री दुर्गां सौम्यवदनां, पाशाङ्कुशधरां पराम्। त्रैलोक्य मोहिनीं देवीं, भवानीं प्रणमाम्यहम् ॥३॥

॥ मूल मन्त्रम् ॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं इन्द्राक्षीं श्रीं ह्रीं ऐं स्वाहा ॥

अथ इन्द्राक्षी स्तुतिः

इन्द्र उवाच ॥

इन्द्राक्षी नाम सा देवी, देवतैः समुदाहृता।
गौरी शाकम्भरी देवी, दुर्गा नाम्नेति विश्रुता ॥१॥
कात्यायनी महादेवी, चण्डघण्टा महातपा।
गायत्री सा च सावित्री ब्रह्माणी ब्रह्मवादिनी ॥२॥
नारायणी भद्रकाली, रुद्राणी कृष्णपिङ्गला।
अग्निज्वाला रौद्रमुखी, कालरात्री तपस्विनी ॥३॥

मेघश्यामा सहस्राक्षी, विष्णुमाया जलोदरी।
महोदरी मुक्तकेशी, घोररूपा महाबला ॥४॥

आनन्दा भद्रजा नन्दा, रोगहर्त्री शिव-प्रिया।
शिवदूती कराली च, प्रत्यक्षपरमेश्वरी ॥५॥

इन्द्राणी चन्द्ररूपा च, इन्द्रशक्तिः परायणा।
महिषासुर संहर्त्री, चामुण्डा गर्भदिवता ॥६॥

वाराही नारसिंही च, भीमा भैरवनादिनी।
श्रुतिः स्मृतिर्धृतिर्मेधा, विद्या लक्ष्मीः सरस्वती ॥७॥

अनन्ता विजया पूर्णा मानस्तोषाऽपराजिता।
भवानी पार्वती दुर्गा, हैमवत्यम्बिका शिवा ॥८॥

शिवा भवानी रुद्राणी, शङ्करार्धशरीरिणी ॥९॥

अथ इन्द्राक्षी स्तोत्र माहात्म्यम्

एतैर्नामपदैर्दिव्यैः, स्तुता शक्रेण धीमता। आयुरारोग्यमैश्वर्यं, सुखसम्पत्तिकारकम् ॥१॥
क्षयापस्मार कुष्ठादि, तापज्वर निवारकम्। शतमावर्तयेद् यस्तु, मुच्यते व्याधिबन्धनात् ॥२॥
आवर्तयेत्सहस्रेण, लभते वाञ्छितं फलम्। राजा वशमवाप्नोति, मासत्रय पठेन्नरः ॥३॥

लक्षमेकं जपेद् यस्तु, साक्षाद् देवीं स पश्यति। त्रिकालं पठते नित्यं, धन-धान्यं च सम्पदः ॥४॥
अर्द्धरात्रौ पठेन्नित्यं, मुच्यते पापबन्धनात् ॥५॥
इन्द्रस्तोत्रमिदं पुण्यं, जपेत्तु फलमाप्नुयात्, विनाशाय, तुरोगाणा, मपमृत्युहराय च ॥६॥
राज्यार्थी लभते राज्य, धनार्थी विपुल धनम्। इच्छाकाम तु कामार्थी, धर्मार्थी धर्ममक्षयम् ॥७॥
विद्यार्थी लभते विद्यां, मोक्षार्थी परमं पदम्। इन्द्रेण कथितं स्तोत्रं सत्यमेतन्न संशयः ॥८॥

॥ इतिश्री इन्द्राक्षी स्तोत्रं सम्पूर्णं जगदम्बार्पणमऽस्तु ॥

॥ पुनः रक्षार्थ प्रार्थना ॥

या माया मधुकैटभ प्रमथिनी, या माहिषोन्मूलिनी,
या धूम्रेक्षणचण्डमुण्डमथिनी, या रक्तबीजनाशिनी।
शक्तिः शुम्भ निशुम्भदैत्यदलिनी, या सिद्ध लक्ष्मीः परा,
सा देवी नव कोटिमूर्तिसहिता, मां पातु माहेश्वरी ॥१॥
जप्तं पापहरं नुतं बलकरं, सम्पूजितं श्रीकरं,
ध्यातं मानकरं स्तुतं धनकरं, सम्भाषितं सिद्धिदम्।
गीतं सुन्दरि वाञ्छितं प्रतनुते, ते पादपद्मद्वयं
भक्तानां भवभीतिभञ्जनकरं, सिद्ध्यष्टदं पातु नः ॥२॥

॥ तर्पणम् कुर्यात् ॥

माया कुण्डलिनी क्रिया मधुमती, काली कला मालिनी

मातङ्गी विजया जया भगवती, देवी शिवा शाम्भवी ।

शक्तिः शङ्करवल्लभा त्रिनयना, वाग्वादिनी भैरवी,

ह्रींकारी त्रिपुरा परापरमयी, माता कुमारीत्यसि ॥

पश्चात् अञ्जुली में वा अर्घ में जल लेकर, निम्न मन्त्रोच्चारण करके भूमि पर छोड़ें:

अनेन मन्त्र पाठेन आत्मनो वाङ्मनःकायोपार्जित पाप निवारणार्थं श्री इष्ट देवी प्रीत्यर्थं भगवती अमा, कामा, चार्वङ्गी, टङ्कधारिणी, तारा, पार्वती, यक्षिणी, श्री शारिका भगवती, श्री शारदा भगवती, श्रीमहाराज्ञी भगवती, श्री ज्वाला भगवती, श्री व्रीडाभगवती, वैखरी भ०, वितस्ता भ०, गंगा भ०, यमुना भ०, कालिका भ०, सिद्धलक्ष्मीः, महालक्ष्मीः, महात्रिपुर-सुन्दरी, सहस्रनाम्नी देवी भवानी सपरिवारा सवाहना सायुधा साङ्गा प्रीयन्तां प्रीतास्तु ॥

अथ श्रीस्थलदेवी भगवती चण्डिकाष्टकम्

रम्यमन्दिरान्तरे मृगेन्द्र पीठ संस्थितां, रक्तवस्त्रसंयुतां सुरक्तदन्तिकां शिवाम् ।
नीलरत्न सन्निभां प्रफुल्ल कञ्जलोचनां, श्रीस्थले निवासिनीं महेश्वरीं नमाम्यहम् ॥१॥
दीप्तभास्करानना भुजाकलाप मण्डितां, चण्डमुण्डघातिनींप्रचण्ड विक्रमान्विताम् ।
शूलखड्ग पाशचाप सायकैर्विभूषितां, श्रीस्थले निवासिनीं महेश्वरीं नमाम्यहम् ॥२॥

सैरिभान्तकारिणीं सुरेन्द्र दुःख हारिणीं, धूम्रनेत्रनाशिनीं निशुम्भशुम्भघातिनीम्।
रक्तबीजदारिकां समस्त विश्वरक्षिकां, श्रीस्थले. . . . . ॥३॥
कालिकां कपालिनीं कृपामयीं विभावतीं, दैत्य सङ्घभक्षिकां दिवौकसां हितेरताम्।
दुर्जन प्रमाथिनीं नृमुण्डमालयायुतां, श्रीस्थले . . . . ॥४॥
नीलकण्ठ वल्लभां प्रपन्नभीति नाशिकां, पार्वतीं सरस्वतीं सुमंगलां च शङ्करीम्।
देवनायकादिभिर्निरन्तरं प्रपूजितां, श्रीस्थले निवासिनीं महेश्वरीं नमाम्यहम् ॥५॥
अम्बिकां विभूतिदां विचित्रशक्तिसम्भृतां, विश्वसिन्धुतारिणीं कृतान्त भीतिहारिणीम्।
सत्प्रबोधदायिकां धियस्तमो निवारिकां, श्रीस्थले. . . . . ॥६॥
भक्तकल्पवल्लरीं समग्रऽसाध्यसाधिकां चण्डिकां दयापरां दरिद्रदुःखहारिणीम्।
रत्नमालयावृतां प्रदीप्त तेज उज्ज्वलां, श्रीस्थले . . . . ॥७॥
सौम्यभावभासिकां सुराङ्गनां सुरार्चिता, मक्षरां निरामयां यशस्करां त्रिलोचनाम्।
चन्द्रबिम्बसन्निभां त्रिलोकसुन्दरीमुमां, श्रीस्थले . . . . ॥८॥

॥ पाठ फलम् ॥

चण्डिकाष्टकंत्विदं दिवागमे सुरालये, यो नरः समाहिता पठेत्सदामुदान्विता।
स्यान्नृस विक्रमी गुणी सुपुत्रवान्निरामयः, सत्कलत्र संयुतः सुखीधनी च कोविदः ॥१॥

॥ इति श्री पं० हरिलाल शर्म्मा विरचित श्री अष्टादश भुजाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

अथ श्री दुर्गाऽऽपदुद्धारस्तोत्रम्

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे। नमस्ते जगद् व्यापिके विश्वरूपे।
नमस्ते जगद्वन्द्य पादारविन्दे। नमस्ते जगत् तारिणी त्राहि दुर्गे ॥१॥
नमस्ते जगच्चिन्त्यमान स्वरूपे। नमस्ते महायोगिनी ज्ञान रूपे।
नमस्ते नमस्ते सदानन्द रूपे। नमस्ते जगत् तारिणी त्राहि दुर्गे ॥२॥
अनाथस्य दीनस्यतृष्णातुरस्य। भयार्त्तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः।
त्वमेका गति देंवी निस्तारकर्त्री। नमस्ते . . . . ॥३॥
अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्ये। ऽतले सागरे प्रान्तरे राजगेहे।
त्वमेका गतिर्देवी निस्तारनौका। नमस्ते . . . . ॥४॥
अपारे महादुस्तरेऽत्यन्त घोरे। विपत्त सागरे मज्जतां देहभाजाम्।
त्वमेका गतिर्देवी निस्तारहेतु। र्नमस्ते . . . . ॥५॥
नमश्चण्डिके चण्ड दुर्दण्ड लीला। समुत्खण्डिताखण्डिताऽशेष शत्रोः।
त्वमेका गतिर्देवी निस्तार बीजं। नमस्ते . . . . ॥६॥
त्वमेवाघभावा धृतासत्यवादो। र्न जाता जिता क्रोधनात्क्रोध निष्ठा।
इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्ना च नाड्यो। नमस्ते . . . . ॥७॥

नमो देवि दुर्गे शिवे भीमपादे । सरस्वत्यरुन्धत्यमोघ स्वरूपे ।
विभूतिः शची कालरात्रिः सती त्वं । नमस्ते . . . . ॥८॥

॥ प्रार्थना ॥

शरणमसि सुराणां सिद्ध विद्याधराणां, मुनि मनुज पशूनां दस्युभिस्त्रासितानाम् ।
नृपतिगृहगतानां व्याधिभिः पीडितानां, त्वमसि शरणमेका देवि दुर्गे प्रसीद ॥

॥ माहात्म्यम् ॥

इदं स्तोत्रं मया प्रोक्तमापदुद्धार हेतुकं, त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा पठनाद् घोर सङ्कटात् ।
मुच्यते नात्र सन्देहो, भुवि - स्वर्गे - रसातले ॥१॥

सर्वं वा श्लोकमेकं वा यः पठेत्भक्तिमान्सदा ।
स सर्वं दुष्कृतं त्यक्त्वा प्राप्नोति परमं पदम् ॥२॥

पठनादस्य देवेशि किम्न सिद्ध्यति भूतले ।
स्तवराजमिदं देवी संक्षेपात्कथितं मया ॥३॥

इति श्री सिद्धेश्वर संवादे श्री दुर्गाऽऽपद् उद्धारस्तोत्रं सम्पूर्णम्
श्रीजगदम्बा अष्टादश भुजार्पणमऽस्तु ॥

अथ नीराजनम्

॥ ओं नमश्चण्डिकायै ॥

प्रथम जो देवी माँ का सुमिरन कीजै। हृदय-ज्ञान-प्रकाशकम्।
देवी वैष्णो देवी माया। श्री चण्डी चरण प्रणाम्यहम् ॥
श्री माता जी के चरण प्रणाम्यहम् श्री देवी माँ के चरण प्रणाम्यहम् ॥१॥
मुकुट तिलक ललाट सोहे, अगर-चन्दन-लेपितम्।
कनक सिंहासन बैठी माता, श्री चण्डी चरण प्रणाम्यहम् ॥
श्रीमाता जी के चरण प्रणाम्यहम् श्री देवी माँ के चरण प्रणाम्यहम् ॥२॥
हाथों में कङ्कन कानों में कुण्डल, हीरे-रत्न-जडायुतम्।
चरण नूपुर नाद गरजे श्री चण्डी . . . . ॥३॥
आदि-माया जुगादि-माया, माया हैं जग मोहिनी।
ब्रह्मा विष्णु महेश थापियो \ श्री चण्डी. . . . . ॥४॥
कौन के घर गायत्री कहिए, कौन के घर लक्ष्मी।
कौन के घर अर्द्धाङ्गिनी गौराँ, श्री चण्डी . . . . ॥५॥
ब्रह्मा के घर गायत्री कहिए, विष्णु के घर लक्ष्मी।
महारुद्र के घर अर्द्धाङ्गिनी गौराँ, श्री चण्डी . . . . ॥६॥

कौन युग में देवी तुलसा जी कहिए, कौन युग में देवी द्रौपदा।
कौन युग में देवी सीता जी कहिए, कौन युग में देवी कालिका ॥
श्री चण्डी. . . . .॥७॥

सत्युग में देवी तुलसा जी कहिए, द्वापर युग में देवी द्रौपदा।
त्रेता युग में देवी सीता जी कहिए, कलियुग में देवी माँ कालिका ॥
श्री चण्डी . . . . ॥८॥

काहे कारण भयो रे जननी ? काहे कारण भार्या ?
काहे कारण भयो रे देवी माँ ? काहे कारण कालिका ॥
श्री चण्डी. . . . . ॥९॥

जन्मकारण भयो रे जननी, सृष्टि कारण भार्या।
पूजा कारण भयो रे देवी माँ, अन्त कारण कालिका॥
श्री चण्डी. . . . .॥१०॥

खड्ग खप्पर त्रिशूल सोहे, शंख चक्र गदा पद्म।
सिंह-चढ़ी देवी रण में गरजे, श्री चण्डी. . . . . ॥११॥
दैत्य मारे असुर संहारे, सब देवन की रक्षा करी।
शरण अपनी रखियो भगवती, श्री चण्डी. . . . .॥१२॥

आकाश धरती पाताल पूजा, तीनों भुवन तेरी सेवा करें।
ऋद्धि-सिद्धि-बल दीजो माता, श्री चण्डी . . . . ॥१३॥
सोने की झारी रूपे की थाली, अगर कपूर की बाती बनी।
रतन झिलमिल होवत आरती, श्री चण्डी चरण प्रणमाम्यहम्।
प्रथम जो . . . . ॥१४॥

(अज्ञात रचना)

अथान्ते ईश-प्रार्थना

नम्र निवेदन : प्रस्तुत ईश-प्रार्थना सर्वज्ञ-सर्वशक्तिमान्-सर्वव्यापक ब्रह्म की प्रभुसत्ता का गुणगान है। हमारे अनुभव में प्रस्तुत संग्रह ओजपूर्ण, स्फूर्तिदायक, भय आतङ्कादिविविध आपत्तियों से मुक्ति दिलाने वाला तथा सुख एवं शान्ति का सञ्चार कराने वाला है, केवल श्रद्धा एवं भक्ति भाव से पाठ करने की आवश्यकता है। अतः प्रत्येक धार्मिक कृत्य की समाप्ति पर इसका पाठ अनिवार्य है। सुख, उत्थान, संघटन, धारण और पोषण का मूलमन्त्र है, अर्थ सहित कण्ठस्थ करने की साग्रह एवं सविनय प्रार्थना ॥

यो दैत्यहन्ता नरकान्तकश्च, भुजाग्र मात्रेण च धर्म गोप्ता।
भूभार संघात विनोद कामं, नमामि देवं रघुवंशदीपम् ॥१॥

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः, प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः, पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ॥२॥

जो दुराचारियों को मारने वाले और नरक की यातनाओं का अन्त करने वाले हैं, जो अपनी भुजाओं के बल से धर्म की रक्षा करते हैं, पृथ्वी के भार का विनाश जिनका मनोरञ्जनमात्र है और जो इस मनोरञ्जन की अभिलाषा रखते हैं। उन रघुकुल दीपक, परब्रह्म श्री (राम) देव को हमारा नमस्कार है ॥१॥

नमस्ते सते ते जगत् कारणाय, नमस्ते चिते सर्व लोकाश्रयाय।
नमोऽद्वैत तत्वाय मुक्ति प्रदाय, नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ॥३॥
त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं, त्वमेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम्।
त्वमेकं जगत्कर्तृ पातृ प्रहर्तृ, त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ॥४॥
भयानां भयं भीषणं भीषणानां, गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम्।
महोच्चैः पदानां नियन्तृ त्वमेकं, परेषां परं रक्षणं रक्षणानाम् ॥५॥

हे प्रभो ! आप संसार के प्राणस्वरूप वायुदेव, अधार्मिकों को दण्डित करने वाले यमराज, समस्त देवताओं के मुख स्वरूप अग्निदेव, जल के स्वामी वरुणदेव, प्राणियों के आनन्द स्रोत चन्द्र-देव, दक्षादि प्रजापति स्वरूप, उनके जन्मदाता

ब्रह्मा एवं उनके भी जनक (पैदा करने वाले) आप साक्षात् भगवान् नारायण-देव हैं। हम आप को सहस्त्रों बार तथा बार-बार प्रणाम करते हैं ॥२॥ हे जगत् के कारण (बंनाने वाले) सत् स्वरूप परमात्मा ! तुझे नमस्कार है। हे सर्व लोकों के आश्रय (सहारे) चित् स्वरूप भगवन् ! तुझे नमस्कार है। हे मुक्ति (आवागमन के चक्र से) प्रदान करने वाले अद्वैत तत्त्व परमात्मन् ! तुझे नमस्कार है। हे अनादि एवं सर्वव्यापक ब्रह्म! तुझे हमारा नमस्कार है ॥३॥ तुम्हीं एक शरण में जाने योग्य अर्थात् अशरण (असहाय) को शरण देने वाले हो। तुम्हीं एक पूजा करने योग्य (वरेण्य) हो ! तुम्हीं संसार के पालने वाले तथा स्व प्रकाश से प्रकाशमान हो। तुम्हीं एकमात्र संसार के कर्ता (बनाने वाले), पालक और संहारक हो। साथ ही केवल तुम्हीं परम निश्चल (अडिग) और निर्विकल्प (अपरिवर्तनशील) हो ॥४॥ तुम भयों (आतङ्क, लूट-पाट, मारकाट की स्थिति उत्पन्न करने वाले तत्त्वों) को भयभीत करने वाले हो। भयङ्करों में भयङ्कर हो। प्राणियों की गति हो और पावनों को पावन करने वाले हो अर्थात् अपने आश्रितों के समाश्रयण हो। अत्यन्त उच्चपदों के तुम्हीं नियामक (नियन्त्रणकर्ता) हो। तुम पर से पर अर्थात् परात्पर ब्रह्म हो तथा रक्षा करने वालों का भी रक्षण करने वाले (Guard of Body-Guards) हो ॥५॥ हम तुम्हारा

वयं त्वां स्मरामो वयं त्वां भजामो, वयं त्वां जगत्साक्षिरूपं नमामः।
सदेकं निधानं निरालम्बमीशं, भवाम्भोधिपोतं शरण्यं व्रजामः ॥६॥
स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां, न्याय्येन मार्गेण महीं महीशाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं, लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु ॥७॥
काले वर्षतु पर्जन्यः पृथ्वी सस्यशालिनी। देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः॥८॥
सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ॥९॥

स्मरण करते हैं, हम तुम्हें भजते हैं। आप जगत् के साक्षी रूप हैं। हम आप के इस रूप को नमस्कार करते हैं। सत् के निधान अर्थात् सत्स्वरूप, सब प्रकार से समर्थ तथा एकमात्र शरण लेने योग्य या आश्रय हो इस भवसागर को पार करने वाले नौका रूप आप परमपिता परमात्मा की हम शरण जाते हैं ॥६॥ हे प्रभो ! प्रजा का पालन करने वाले तथा न्याय-पथ पर चलकर शासन करने वाले भूस्वामियों (उच्च पदाधिकारियों का) का कल्याण हो। गौमाता तथा परमार्थ एवं पुरुषार्थ पथ पर चलने वाले ब्राह्मणों का मङ्गल हो। सब लोग सुखी हों ॥७॥ समय-समय पर बादल वर्षा करें जिससे पृथ्वी फसलों से परिपूर्ण हो। हमारा यह भारत भू-भाग अर्थात् भारत देश दैविक एवं भौतिक बाधाओं से अशान्त न हो और ब्राह्मण निर्भय हो जायें ॥८॥ प्रभो ! इस संसार में सब सुखी हों, सब नीरोग हों, सब कल्याण-मङ्गलों का ही दर्शन करें तथा कोई भी लेशमात्र दुःख का भागी न बने अर्थात् दुःखी न हो ॥९॥ हे जगन्नाथ ! दुराचारी सदाचारी बनें, सदाचारी शान्ति के

दुर्जनः सज्जनो भूयात्, सज्जनः शन्तिमाप्नुयात्।
शान्तो मुच्येत बन्धेभ्यो, मुक्तश्चान्यान्विमोचयेत् ॥१०॥

अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु, पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
अधनाः सधनाः सन्तु, जीवन्तु शरदां शतम् ॥११॥

सर्वस्तरतु दुर्गाणि, सर्वे भद्राणि पश्यतु।
सर्वः सद्बुद्धिमाप्नोतु, सर्वः सर्वत्र नन्दतु ॥१२॥

शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

सम शान्ति हो हृदय में धर्म का हो ध्यान।
शान्ति हो त्रैलोक्य में यह वर दो भगवान् ॥१३॥

भागी बनें, शान्त बन्धनों से मुक्त हो जायें तथा मुक्तजन अर्थात् स्वतन्त्र जन दूसरों को स्वतन्त्रता दिलाने में सहायक बनें ॥१०॥ प्रभो ! पुत्रफल से वञ्चित् पुत्रवान् बनें, पुत्रों वाले पौत्रों वाले बनें, निर्धन धनवान बनें तथा सौ वर्ष तक जियें ॥११॥ दुःखभञ्जन ! कठिनाइयों से-आपत्तियों-विपत्तियों से सब रक्षा पायें, सब मङ्गलों का दर्शन करें, सब को सद्बुद्धि प्राप्त हो और सभी लोग सदा-सर्वदा-सर्वत्र आनन्द-लाभ करें॥१२॥ जगन्नाथ प्रभो ! शान्ति दो ! शान्ति दो !! शान्ति दो !!! आगे की छन्दोबद्ध प्रार्थना हिन्दी भाषा में है तथा बोधगम्य है अतः व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है ॥ जय श्री राम !!

शान्ति हो इस भवन में, घर घर शान्ति महान।
शान्ति दो हम सबन में, यह वर माँगूँ राम ॥१४॥
न विद्या न बाहुबल, न खर्चन को दाम।
मुझ-से पतित पतङ्ग की, तुम पत राखो राम ॥१५॥
लज्जा तुम्हरे हाथ है, सुनो गरीब नवाज़।
विपत्ति-निवारण दुःख हरण, सारन सबके काज ॥६७॥
सियावर राम जय जय राम ॥ मेरे प्रभु राम जय जय राम।

॥ अन्तिम प्रार्थना ॥

आवाहनं न जानामि, न जानामि विजर्सजनम्।
पूजाभावं न जानामि, क्षम्यतां परमेश्वर ॥
क्षम्यतां परमेश्वरि ॥

॥ दण्डवत् प्रणाम ॥

पद्भ्यां, कराभ्यां, जानुभ्यां, शिरसा, उरुसा, मनसा, वचसा, कर्मणः च
साष्टाङ्ग नमस्कारं करोमि नमः ॥

इति धर्मार्थकाममोक्षदा श्री भवानी सहस्रनामस्तवराज पाठं सम्पूर्णम् ॥

दिनाङ्क : वैक्रम सम्वत् २०५० फाल्गुन शुक्ल चतुर्दश्यां शनिवासरान्वितायां समाप्तोऽयं परोपकारार्थ सङ्कल्पः ॥

॥ जगज्जननी माता की आरतियों का संग्रह ॥

(१)

जय अम्बे गौरी मैया जय अम्बे गौरी, मैया जय आनन्द करनी, मैया जय मङ्गल करनी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवजी, जय अम्बे गौरी ॥१॥
माँग सिन्दूर विराजत टीको मृगमद को, मैया टीको मृग मद को ।
उज्ज्वल से दोउ नैना चन्द्रवदन नीको, जय अम्बे गौरी ॥२॥
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे, मैया०................।
रक्त पुष्प गल माला कण्ठन पर साजे, जय०................॥३॥
केहरी वाहन राजत खड्ग खप्पर धारी, मैया०..............।
सुर नर मुनिजन सेवत तिनके दुःख हारी, जय०............॥४॥
कानन कुण्डल शोभित नासा गज-मोती, मैया०.................।
कोटिक चन्द्र-दिवाकर सम राजत ज्योती, जय०..............॥५॥
शुम्भ-निशुम्भ विदारे महिषासुर घाती, मैया०...................।
धूम्र विलोचन नयना निशि-दिन मदमाती, जय०...............॥६॥
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे, मैया०..............।
मधु-कैटभ दोउ मारे सुर भयहीन करे, जय०.................॥७॥

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी मैया०....।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी, जय अम्बे०....॥८॥
चौंसठ योगिनी मङ्गल गावत, नृत्य करत भैरू मैया०....।
बाजत ताल मृदङ्ग, और बाजत डमरू जय अम्बे०....॥९॥
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता मैया०....।
भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पत्ति करता, जय अम्बे०.....॥१०॥
भुजाचार अति शोभित, वर अभय धारी मैया०....।
मन वाञ्छित फल पावत, सेवत नर-नारी जय अम्बे०....॥११॥
कञ्चन थाल विराजत, अगर-कपूर बाती मैया अगर-कपूर बाती....।
श्री मालकेतु में राजत कोटि रतन ज्योति, जय० अम्बे०....॥१२॥
अम्बे जी की आरती, जो कोई गावे, मैया....।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावे, जय अम्बे०....॥१३॥
जय अम्बे गौरि ! मैया जय अम्बे गौरि !! मैया जय आनन्द करनी....।
तुम को निशि-दिन ध्यावत हर ब्रह्मा शिव जी जय०....।

जग जननी जय ! जय !! माँ जगजननी जय ! जय !!

भय-हारिणि भव-तारिणि, भव भामिनी जय ! जय !! जग जननी ॥१॥

तू ही सत्-चित् सुखमय, शुद्ध ब्रह्मरूपा मैया० ।

सत्य सनातन सुंदर, पर शिव सुर भूपा जग जननी० ॥२॥

आदि अनादि अनामय, अविचल अविनाशी, मैया० ।

अमल अनंत अगोचर, अज आनंद राशी, जग० ॥३॥

अविकारी अघहारी, अकल कलाधारी, मैया० ।

कर्ताविधि, भर्ताहरि, हर संहारकारी, जग० ॥४॥

तू विधि वधू, रमा तू, तू उमा महामाया, मैया० ।

मूल प्रकृति विद्या तू, तू जननी जाया, जग० ॥५॥

राम कृष्ण तू सीता, ब्रजरानी राधा, मैया० ।

तू वाञ्छा कल्पद्रुम, हारिणि भव बाधा, जग० ॥६॥

दश विद्या नवदुर्गा, नाना शस्त्रकरा, मैया० ।

अष्टमातृका योगिनि, नव-नव रूपधरा, जग० ॥७॥

तू परधाम निवासिनि, महाविलासिनि तू, मैया०

तु ही श्मशानविहारिणी, ताण्डवलासिनि तू, जग० ॥८॥

सुरमुनिमोहिनि सौम्या, तू शोभाऽऽधारा, मैया० ।

विवसन विकट स्वरूपा, प्रलयमयी धारा, जग० ॥९॥

तू ही स्नेहसुधामयि, तू अति गरलमना, मैया० ।

रत्न विभूषित तू ही, तू ही अस्थितना, जग० ॥१०॥

मूलाधार निवासिनि, इह पर सिद्धिप्रदे, मैया० ।

कालातीता काली, कमला तू वरदे, जग० ॥११॥

शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी मैया० ।

भेद प्रदर्शिनि वाणी, विमले ! वेद त्रयी, जग० ॥१२॥

हम अति दीन दुःखी माँ ! विपत् जाल घेरे, मैया० ।

हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे, जग० ॥१३॥

निज स्वभाववश जननी ! दया दृष्टि कीजै, मैया० ।

करुणाकर करुणामयि ! चरण शरण दीजै ॥१४॥

जग जननी जय ! जय !! ॥१५॥

जय अम्बे गौरी ! मैया जय अम्बे गौरी !! मैया जय मङ्गल करनी !!!
मैया जय आनन्द करनी !!!! मैया जय सब दुःख हरनी !!!!!
तुम को निशि-दिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी, जय अम्बे गौरी ॥१॥

माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृग मद को, मैया० ।
उज्ज्वल से दोउ नैना, चन्द्र वदन नीको, जय० ॥२॥

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजे, मैया० ।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे, जय० ॥३॥

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती, मैया० ।
कोटिक चन्द्र-दिवाकर, सम राजत, ज्योती, जय० ॥४॥

केहरी वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी, मैया० ।
सुर नर मुनि जन सेवत, तिन के दुःख हारी, जय० ॥५॥

शुम्भ-निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती, मैया० ।
धूम्रविलोचन नयना, निशिदिन मदमाती, जय० ॥६॥

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे, मैया०
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भय हीन करे, जय ॥७॥

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी, मैया०

आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी, जय० ॥८॥

चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरू, मैया० ।

बाजत ताल मृदंगा, अरु बाजत डमरू जय० ॥९॥

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता, मैया०

भक्तन की दुःख हरता, सुख-सम्पत्ति करता, जय० ॥१०॥

भुजा चार अति शोभित, वर अभय धारी, मैया० ।

मनवाञ्छित फल पावत, सेवत नर नारी, जय० ॥११॥

कञ्चन थाल विराजत, अगर कपूर बाती, मैया० ।

श्री मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति, जय० ॥१२॥

आदि शक्ति की आरती, जो कोई नर गावे, मैया० ।

कहत शिवानन्द स्वामी, सुखसम्पति पावे जय०॥१३॥

॥४॥

मंगल की सेवा सुन मेरी देवा, हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट धरें ॥
सुन जगदम्बा कर न विलम्बा, सन्तन का भण्डार भरे।
सन्तन प्रतिपाली सदा खुशहाली, जय काली कल्याण करे ॥१॥
बुद्धि विधाता तू जग माता, मेरा कारज सिद्ध करे।
चरण कमल का लिया आसरा शरण तुम्हारी आन पड़े ॥
जब-जब भीर पड़ी भक्तन पर, तब-तब आय सहाय करे।
सन्तन प्रतिपाली०..................................॥२॥
बार-बार ते सब जग मोह्यो, तरुणी रूप अनूप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावे, कहीं भार्या है भोग करे ॥
सन्तन सुखदायी सदा सहाई, सन्त खड़े जयकार करें।
सन्तन प्रतिपाली०..................................॥३॥
ब्रह्मा विष्णु महेश फल लिये, भेंट देन तेरे द्वार खड़े।
अटल सिंहासन बैठी माता, सिर सोने का छत्र फिरे ॥
सन्तन प्रतिपाली०..................................॥४॥

बार शनिश्चर कुङ्कुम बरणो, जब लुङ्कुड़ पर हुकुम करे।

खङ्ग खप्पर त्रिशूल हाथलिये, रक्तबीज को भस्म करे ॥

शुम्भ-निशुम्भ को क्षण में मारे, महिषासुर को पकड़ दले।

सन्तन प्रतिपाली०................................॥५॥

आदित्यवार आदि भवानी, जन अपने को कष्ट हरे।

कुपित होय कर दानव मारे, चण्ड मुण्ड सब चूरकरे ॥

जब तुम देखो दया रूप होय, पल में सङ्कट दूर करे।

सन्तन प्रतिपाली०................................॥६॥

सौम्य स्वभाव धर्‌यो मेरी माता, जन की अरज़ कबूल करे।

सिंह पीठ पर चढ़ी भवानी, अटल भवन में राज करे ॥

दर्शन पावें मङ्गल गावें, सिद्ध साध तेरी भेंट धरें।

सन्तन प्रतिपाली०................................॥७॥

ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे, शिव शङ्कर जी ध्यान धरें।

इन्द्र कृष्ण तेरी करें आरती, चँवर कुबेर डुलाय रहे ॥

जय जननी जय मातु भवानी, अटल भवन में राज करे।

सन्तन प्रतिपाली सदा खुशहाली ज़य काली कल्याण करे ॥८॥

❖❖

अम्बे ! तू है जगदम्बे काली ! जय दुर्गे खप्पर वाली !! वैष्णो पहाड़ां वाली !!!
ज्वाला तू लाटां वाली, तेरे ही गुण गाये भारती।
ओ मैया भक्तों को तारे तेरी आरती ! ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती !........॥१॥
तेरे भक्त जनों पर माता ! भीड़ पड़ी है भारी।
दानव दल पर टूट पड़ो माँ। करके सिंह सवारी ॥
सौ सौ सिंहों से हे बलशाली ! हे दश भुजा वाली ! दुःखियों के दुःखड़े निवारती, ओं मैया ! .....॥२॥
माँ-बेटे का है इस इस जग में,बड़ा ही निर्मल नाता।
पूत कुपूत सुने हैं पर न,माता सुनी कुमाता ॥
सब पे करुणा दरसाने वाली, अमृत बरसाने वाली, दुखियों के दुखड़े निवारती, ओ मैया. . . . . ॥३॥
नहीं मांगते धन और दौलत,ना चाँदी ना सोना।
हमतो मांगे माँ ! तेरे मन में एक छोटा सा कोना ॥
सबकी बिगड़ी बनाने वाली, लाज बचाने वाली, सतियों के सत को सँवारती, ओ मैया. . . . . ॥३॥

❖❖

॥ श्री भवानी लक्ष्म्याष्टकम् ॥

न तातो न माता, न बन्धुर्न भ्राता। न पुत्रो न पुत्री, न भृत्यो न भर्ता।
न जाया न वित्तं, न वृत्तिर्ममैव। गतिस्त्वं मस्तित्वं त्वमेका भवानी ॥१॥
भवाब्धावपारे महादुःख भीरु, पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः।
कुसंसार पाश प्रबद्धः सदाहम्। गतिस्त्वं मस्तित्वं त्वमेका भवानी ॥२॥
न जानामि दानं, न च ध्यान योगं, न जानामि तंत्रं न च स्तोत्र मन्त्रम्!।
न जानामि पूजां न च न्यास योगं। गतिस्त्वं..॥३॥
न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं, न जानामि मुक्तिं लयंवा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं, व्रतं, वापि मातर्गतिस्त्वं..॥४॥
कुकर्मी कुसंगी कुबुद्धिः कुदासः, कुलाचार हीनः दुराचार लीनः।
कुदृष्टि कुवाक्य प्रबन्धः सदाहं। गतिस्त्वं..॥५॥
प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं, दिनेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चान्यत् सदाऽहंशरण्ये। गतिस्त्वं..॥६॥
विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे, जले चाऽनले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि। गतिस्त्वं..॥७॥

अनाथो दरिद्रो जरारोग . युक्तो, महाक्षीण दीनः सदा जाड्य वक्त्रः।
विपत्तो प्रविष्टः सदाहं भजामि। गतिस्त्वं..............................॥८॥

॥ इति श्री मच्छङ्कराचार्यकृत लक्ष्म्याष्टकं सम्पूर्णम् ॥

॥ श्री देव्यपराध क्षमापनस्तोत्रम् ॥

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि न जाने स्तुतिमहो। न चाह्वानं ध्यानं तदपिच न जाने स्तुति-कथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं। परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम् ॥१॥
विधेरज्ञानेन द्रविण विरहेणाऽलसतया। विधेयाऽशक्यत्वात् तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे। कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥२॥
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः। परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे। कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥३॥
जगन्मातर्मातस्तव चरण सेवा न रचिता। न वा दत्तं देवि! द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत्प्रकुरुषे। कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥४॥
परित्यक्ता देवा विविध-विधि-सेवाकुलतया। मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नाऽपि भविता। निरालम्बो लम्बोदर जननि ! कं यामि शरणम् ॥५॥

श्वपाको जलपाको भवति मधुपाकोपमगिरा। निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटि-कनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं। जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥६॥
चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो। जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।
कपाली-भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं। भवानि त्वत्पाणि-ग्रहण-परिपाटी-फलमिदम् ॥७॥
न मोक्षस्याऽऽकांक्षा भव-विभव-वाञ्छापि च न मे। न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै। मृडानी रुद्राणी शिव-शिव भवानीति जपतः ॥८॥
नाऽऽराधितासि विधिना विविधोपचारैः। किं रुक्ष-चिन्तन-परैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन मय्यनाथे। धत्से कृपामुचितमम्ब ! परं तवैव ॥९॥
आपत्सुमग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि। नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधा तृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥
जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणाऽस्ति चेन्मयि। अपराध-परम्पराऽऽवृतं नहि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥
मत्समा पातकीनाऽस्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि। एवं ज्ञात्वा महादेवि। यथायोग्यं तथा कुरु ॥१२॥

॥ इति श्री मच्छङ्कराचार्यकृतं देव्यऽपराधक्षमापनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अथ हवनार्थ श्री भवानी सहस्रनामावल्यानुक्रमणिकाः

॥ ध्यानम् ॥

ॐ अर्धेन्दुमौलिममलाममराभिवन्द्या। मम्भोजपाशसृणिरक्त कपाल हस्ताम् ॥१॥
रक्तांगरागरशनाऽऽभरणां त्रिनेत्रां। ध्याय्येच्छिवस्य वनितां मधुविह्वलाङ्गीम् ॥२॥

॥ प्रथम मूलमन्त्र का तीन बार स्वाहाकार ॥

ॐ बीज त्रयायै विद्महे, तत्प्रधानायै धीमहि, तन्नः शक्तिः प्रचोदयात् स्वाहा ॥३॥

नामावली

ॐ महाविद्यायै स्वाहा, जगन्मात्रे० महालक्ष्म्यै० शिवप्रियायै० विष्णुमायायै० शुभायै० शान्तायै० सिद्धायै० सिद्धसरस्वत्यै० क्षमायै० कान्त्यै० प्रभायै० ज्योत्स्नायै० पार्वत्यै० सर्वमङ्गलायै० हिङ्गुलायै० चण्डिकायै० दान्तायै० पद्मायै० लक्ष्म्यै० हरिप्रियायै० त्रिपुरानन्दिन्यै० नन्दायै० सुनन्दायै० सुरवन्दितायै० यज्ञविद्यायै० महामायायै० वेदमात्रे० सुधाधृत्यै० प्रीति प्रियायै० प्रसिद्धायै० मृडान्यै० विन्ध्यवासिन्यै० सिद्ध विद्यायै० महाशक्त्यै० पृथ्व्यै० नारदसेवितायै० पुरुहूतप्रियायै० कान्तायै० कामिन्यै० पद्मलोचनायै० प्रह्लादिन्यै० महामात्रे० दुर्गायै० दुर्गतिनाशिन्यै० ज्वालामुख्यै० सुगोत्रायै० ज्योतिषे० कुमुदहासिन्यै० दुर्गमायै० दुर्लभविद्यायै० स्वर्गतये० पुरवासिन्यै० अपर्णायै० शाम्बरीमायायै० मदिरायै० मृदुहासिन्यै० कुलवागीश्वर्यै० नित्यायै० नित्यक्लिन्नायै० कृशोदर्यै० कामेश्वर्यै० नीलायै० भीरुण्डायै० वह्निवासिन्यै० लम्बोदर्यै० महाकाल्यै० विद्यायै० विद्येश्वर्यै० नरेशवर्यै०

सत्यायै० सर्वसौभाग्यवर्धिन्यै० संकर्षण्यै० नारसिंह्यै० वैष्णव्यै० महोदर्यै० कात्यायन्यै० चम्पायै० सर्वसम्पत्तिकारिण्यै० नारायण्यै० महानिद्रायै० योगनिद्रायै० प्रभावत्यै० प्रज्ञापारमितायै० प्रज्ञायै० तारायै० मधुमत्यै० मधवे० क्षीरार्णवसुधायै० हालायै० कालिकायै० सिंहवाहनायै० ओङ्कारायै० सुधाकारायै० चेतनायै० कोपनाकृत्यै० अर्धबिन्दुधरायै० धीरायै० विश्वमात्रे स्वाहा ॥ **ॐ तेजोसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामासि प्रियन्देवानामनादृष्टं देवयजनं देवताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृह्णामि देवेभ्यस्त्वा यज्ञेभ्यो गृह्णामि** ॥ ॐ कलावत्यै स्वाहा ॥१००॥

॥ ध्यानम् ॥

या कुन्देन्दु तुषारहार धवला, या श्वेतपद्मासना । या वीणा वरदण्डमण्डितकरा, या शुभ्र वस्त्रान्विता ।
या ब्रह्माच्युत शङ्कर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता । सा मां पातु सरस्वती भगवती, निःशेषजाड्यापहा ॥२॥

ॐ पद्मावत्यै स्वाहा, सुवस्त्रायै० प्रबुद्धायै० सरस्वत्यै० कुण्डासनायै० जगद्धात्र्यै० बुद्धमात्रे० जिनेश्वर्यै० जिनमात्रे० जिनेन्द्रायै० शारदायै० हंसवाहनायै० राज्य लक्ष्म्यै० वषट्कारायै० सुधाकारायै० सुधात्मिकायै० राजनीत्यै० त्रयीवार्तायै० दण्डनीत्यै० क्रियावत्यै० सद्भूतये० तारिण्यै० श्रद्धायै० सद्गतये० सत्परायणायै० सिन्धवे० मन्दाकिन्यै० गङ्गायै० यमुनायै० सरस्वत्यै० गोदावर्यै० विपाशायै० कावेरियै० शतह्रदायै० सरय्वै० चन्द्रभागायै० कौशिक्यै० गण्डक्यै० शुचये० नर्मदायै० अकर्मनाशायै० चर्मण्वत्यै० देविकायै० वेत्रवत्यै० वितस्तायै० वदरायै० नरवाहनायै० सत्यै० पतिव्रतायै० साध्व्यै० सुचक्षुषे० कुण्डवासिन्यै० एकचक्षुषे० सहस्राक्ष्यै० सुश्रेणये० भगमालिन्यै० सेना श्रेणये० पताकायै० सुव्यूहायै० युद्धकांक्षिण्यै० पताकिन्यै० दयारम्भायै० विपञ्चयै० पञ्चम प्रियायै० परापरकला कान्तायै० त्रिशक्तये० मोक्षदायिन्यै० ऐन्द्रयै० माहेश्वर्यै० ब्राह्मयै० कौमार्यै० कुलवासिन्यै० इच्छायै० भगवत्यै० शक्तये० कामधेनवे० कृपावंत्यै० वज्रायुधायै० वज्रहस्तायै० चण्ड्यै० चण्डपराक्रमायै० गौर्यै०

सुवर्णवर्णायै० स्थितिससंहारकारिण्यै० एकानेकायै० महेज्यायै० शतबाहवे० महाभुजायै० भुजङ्गभूषणायै० षट्चक्रक्रमवासिन्यै० षट्चक्रभेदिन्यै० शूरायै० कायस्थायै० कायवर्जितायै० सुस्मितायै० सुमुख्यै० क्षामायै० मूलप्रकृतये० ॥**तेजोसि**॥ ॐ ईश्वर्यैस्वाहा०

॥ *ध्यानम्* ॥

या श्रीर्वेदमुखी तपः फलमुखी, नित्यं च निद्रामुखी
नानारूपधरी सदा जयकरी, विद्याधरी शङ्करी।
गौरी पीन पयोधरी रिपुहरी, मालास्थिमालाधरी
सा मां पातु सरस्वती भगवती, निःशेषजाड्यापहा ॥३॥

ॐ अजायै स्वाहा, बहुवर्णायै० पुरुषार्थ प्रवर्तिन्यै० रक्तायै० नीलायै० सितायै० श्यामायै० कृष्णायै० पीतायै० कर्बुरायै० क्षुधयै० तृष्णायै० जरायै० वृद्धायै० तरुण्यै० करुणालयायै० कलायै० काष्ठायै० मुहूर्त्तायै० निमेषायै० कालरूपिण्यै० सुकर्णरसनानासायै० चक्षुः स्पर्शवत्यै० रसायै० गन्धप्रियायै० सुगन्धायै० सुस्पर्शायै० मनोगतये० मृगनाभये० मृगाक्ष्यै० कर्पूरामोदधारिण्यै० पद्मयोनये० सुकेश्यै० सुलिङ्गायै० भगरूपिण्यै० योनिमुद्रायै० महामुद्रायै० खेचर्यै० खगगामिन्यै० मधुश्रियै० माध्वीवल्ल्यै० मधुमत्तायै० मदोद्धतायै० माताङ्ग्यै० शुकहस्तायै० पुष्पबाणायै० इक्षुचापिन्यै० रक्ताम्बरधरायै० क्षीबायै० रक्तपुष्पावतंसिन्यै० शुभ्राम्बरधरायै० धीरायै० महाश्वेतायै० वसुप्रियायै० सुवेण्यै० पद्महस्तायै० मुक्ताहार विभूषणायै० कर्पूरामोद निःश्वासायै० पद्मिन्यै० पद्ममन्दिरायै० खङ्गिन्यै० चक्रहस्तायै० भुषुण्ड्यै० परिघायुधायै० चापिन्यै० पाशहस्तायै० त्रिशूलवरधारिण्यै० सुबाणायै० शक्तिहस्तायै० मयूरवरवाहनायै० वरायुधधरायै० वीरायै० वीरपानमदोत्कटायै० वसुधायै०

वसुधारायै० जयायै० शाकम्भर्यै० शिवायै० विजयायै० जयन्त्यै० सुस्तनायै० शत्रुनाशिन्यै० अन्तर्वत्न्यै० वेदशक्त्यै० वरदायै० वरधारिण्यै० शीतलायै० सुशीलायै० बालग्रहविनाशिन्यै० कौमार्यै० वसुपर्णायै० कामाख्यायै० कामवन्दितायै० जालन्धरधरायै० अनन्तायै० कामरूप निवासिन्यै० कामबीजवत्यै० सत्यायै० सत्यधर्म परायणायै० ॥ **तेजोसि** ॥ ॐ स्थूल मार्गस्थित्तायै स्वाहा ॥३००॥

॥ *ध्यानम्* ॥

या देवी शिवकेशवादिजननी, या वै जगद् रूपिणी
या ब्रह्मादि पिपीलिकान्त जनता, नन्दैक सन्दायिनी ।
या पञ्च प्रणमन्निलिम्पनयनी, या चित्कलामालिनी
सा पायात्परदेवता भगवती, श्री राजराजेश्वरी ॥४॥

ॐ सूक्ष्मायै स्वाहाः सूक्ष्म बुद्धिप्रबोधिन्यै० षट्कोणायै० त्रिकोणायै० त्रिनेत्रायै० वृषभध्वजायै० वृषप्रियायै० वृषारूढायै० महिषासुरघातिन्यै० शुम्भदर्पहरायै० दीप्तायै० दीप्तपावकसन्निभायै० कपालभूषणायै० काल्यै० कपालमालधारिण्यै० कपालकुण्डलायै० दीर्घायै० शिवदूत्यै० घनध्वनये० सिद्धिदायै० बुद्धिदायै० नित्यायै० सत्यमार्गप्रबोधिन्यै० कम्बुग्रीवायै० वसुमत्यै० छत्रच्छायाकृतालयायै० जगद्गर्भायै० कुण्डलिन्यै० भुजङ्गाकाराशायिन्यै० प्रोल्लसत्सप्तपद्मायै० नाभिनालमृणालिन्यै० मूलधारायै० निराकारायै० वह्निकुण्डकृतालयायै० वायुकुण्डसुखासीनायै० निराधारायै० निराश्रयायै० श्वासोच्छासगतये० जीवाग्राहिण्यै० वह्निसंश्रयायै० वल्लीतन्तुसमुत्थनायै० षड्सास्वादलोलुपायै० तपस्विन्यै० तपः सिद्धये० तपसः सिद्धिदायिन्यै० तपोनिष्ठायै० तपोयुक्तायै० तापस्यै० तपः प्रियायै० सप्तधातुमय्यै० मूर्त्यै० सप्तधात्वन्तराश्रयायै० देहपुष्टयै० मनः पुष्टयै० अन्नपुष्ट्यै० बलोद्धतायै०

औषधयै० वैद्यमात्रे० द्रव्यशक्तये० प्रभावत्यै० वैद्यायै० वैद्यचिकित्सायैं० सुपथ्यायै० रोगनाशिन्यै० मृगयायै० मृगमांसादायै० मृगत्वचे० मृगलोचनायै० वागुरायै० बन्धरूपायै० वधरूपायै० वधोद्धतायै० वन्द्यै० बन्दिस्तुतायै० कारायै० काराबन्धविमोचिन्यै० शृङ्खलायै० खलहायै० विद्युते० दृढबन्धविमोचिन्यै० अम्बिकायै० अम्बालिकायै० अम्बायै० स्वक्षायै० साधुजनार्चितायै० कौलिक्यै० कुलविद्यायै० सुकुलायै० कुलपूजितायै० कालचक्रभ्रमायै० भ्रान्तायै० विभ्रमायै० भ्रमनाशिन्यै० वात्याल्यै० मेघमालायै० सुवृष्ट्यै० सस्यवर्धिन्यै० अकारायै० इकारायै० ॥ **तेजोसि** ॥ ॐ उकारायै स्वाहा ॥४००॥

॥ ध्यानम् ॥

सप्तर्षिप्रणताङ्घ्रि पङ्कजयुगा या सप्तलोकार्तिहृत्
बीजैः सप्तभिरुज्ज्वलाकृतिरसौ, या सप्त सप्तिद्युतिः।
काश्मीर प्रवरेश मध्यनगरी, प्रद्युम्नपीठेस्थिता
देवी सप्तक संयुता भगवती, श्री शरिका पातु नः ॥५॥

ॐ एङ्काररूपिण्यै, ह्रीङ्कार बीजरूपायै० क्लीङ्काराम्बर वासिन्यै० सर्वाक्षरमयी शक्त्यै० अक्षरायै० वर्णमालिन्यै० सिन्दूरारुण वर्णायै० सिन्दूर तिलक प्रियायै० वश्यायै० वश्यबीजायै० लोकवश्यविभाविन्यै० नृपवश्यायै० नृपसेव्यायै० नृपवश्यकरी क्रियायै० महिष्यै० नृपमान्यायै० नृपान्यायै० नृपानन्दिन्यै० नृपधर्ममय्यै० धन्यायै० धनधान्य-विवर्धिन्यै० चतुर्वर्णमयीमूर्त्यै० चतुर्वर्णैः सुपूजितायै० सर्वधर्ममयी सिद्ध्यै० चतुराश्रमवासिन्यै० ब्राह्मण्यै० क्षत्रियायै० वैश्यायै० शूद्रायै० अवरर्णजायै० वेदमार्गरतायै० यज्ञायै० वेदविश्वविभाविन्यै० अस्त्रशस्त्रमयी विद्यायै० वरशस्त्रस्वधारिण्यै० सुमेधायै० सत्यमेधायै० भद्रकाल्यै०

अपराजितायै० गायत्र्यै० सत्कृतायै० सन्ध्यायै० सावित्र्यै० त्रिपदाश्रयायै० त्रिसन्ध्यायै० त्रिपदायै० धात्र्यै० सुपर्वायै० सामगायन्त्यै० पाञ्चाल्यै० बालिकायै० बालायै० बालक्रीडायै० सनातन्यै० गर्भाधारधरायै० शून्यायै० गर्भाशयनिवासिन्यै० सुरारिघातिन्यै० कृत्यायै० पूतनायै० तिलोत्तमायै० लज्जायै० रसवत्यै० नन्दायै० भवान्यै, पापनाशिन्यै० पट्टाम्बरधरायै० गीत्यै० सुगीत्यै० ज्ञानलोचनायै० सप्तस्वरमय्यै० तन्त्र्यै० षडजमध्यमदेवतायै० मूर्च्छनायै० ग्रामसंस्थानायै० स्वस्थायै० स्वस्थान-वासिन्यै० अट्टाट्टहासिन्यै० प्रेतायै० प्रेतासननिवासिन्यै० गीत-नृत्यप्रियायै० कामायै० तुष्टिदायै० पुष्टिदायै० अक्षयायै० निष्ठायै० सत्य प्रियायै० प्रख्यायै० लोकेश्यै० सुरोत्तमायै० सुविषायै० ज्वलिन्यै० ज्वालायै० विश्वमोहार्तिनाशिन्यै० विषायै० नागदमन्यै० कुरुकुल्यायै० अमृतोद्भवायै० भूतभीतिहरायै स्वाहा ॥ **तेजोसि** ॥ ॐ रक्षायै स्वाहा ॥५००॥

॥ ध्यानम् ॥

भक्तानां सिद्धिदात्री नलिनयुगकरा,श्वेतपद्मासनस्था

लक्ष्मीरूपा त्रिनेत्रा हिमकरवदना, सर्वदैत्येन्द्रहन्त्री ।

वागीशी सिद्धिकर्त्री सकलमुनिजनैः,सेविता या भवानी ।

नौम्यहं नौम्यहं त्वां हरिहर प्रणतां,शारिकां नौमिनौमि ॥६॥

ॐ भूतावेशविनाशिन्यै स्वाहा, रक्षोघ्न्यै० राक्षस्यै० दीर्घनिद्रानिवारिण्यै० चन्द्रिकायै० चन्द्रकान्तये० सूर्यकान्तये० निशाचर्यै० डाकिन्यै० शाकिन्यै० शिष्यायै० हाकिन्यै० चक्रवाकिन्यै० सितायै० सितप्रियायै० स्वङ्गायै० सुकुलायै० वनदेवतायै० गुरुरूपधरायै० गुर्व्यै० मृत्यवे० मार्यै० विशारदायै० महामार्यै० विनिद्रायै० तन्द्रायै० मृत्युविनाशिन्यै० चन्द्रमण्डलसङ्काशायै० चन्द्रमण्डलवासिन्यै० अणिमादिगुणोपेतायै० सुस्पृहायै० कामरूपिण्यै० अष्टसिद्धिप्रदायै० प्रौढायै० दुष्टदानघातिन्यै० अनादिनिधनायै० पुष्ट्यै०

चतुर्बाहवे० चतुर्मुख्यै० चतुःसमुद्रशयनायै० चतुर्वर्गफलप्रदायै० काशपुष्प प्रतीकाशायै० शरत्कुमुदलोचनायै० भूतायै० भव्यायै० भविष्यायै० शैलजायै ० शैलवासिन्यै० वाममार्ग रतायै० वामायै० शिववामाङ्गवासिन्यै० वामाचारप्रियायै० तुष्टायै० लोपामुद्राप्रबोधिन्यै० भूतात्मने० परमात्मने० भूतभाव विभाविन्यै० मङ्गलायै० सुशीलायै० परमार्थ प्रबोधिन्यै० दक्षिणायै० दक्षिणामूर्तये० सुदीक्षायै० हरिप्रस्व्यै० योगिन्यै० योगयुक्तायै० योगाङ्गायै० ध्यानशालिन्यै० योगपट्टधरायै० मुक्तायै० मुक्तानां परमागतये० नारसिंह्यै० सुजन्मने० त्रिवर्गफलदायिन्यै० धर्मदायै० धनदायै० एकायै० कामदायै० मोक्षदायै० द्युतये० साक्षिण्यै० क्षणदायै० दक्षायै० दक्षजायै० कोटिरूपिण्यै० क्रतवे० कात्यायन्यै० स्वच्छायै० स्वच्छन्दायै० कविप्रियायै० सत्यागमायै० बहिःस्थायै० काव्यशक्तयै०, कवित्वदायै० मैनापुत्र्यै० सतीमातायै० मैनाक भगिन्यै० तडिते स्वाहा ॥ **तेजोसि०** ॥ ॐ सौदामिन्यै स्वाहा ॥६००॥

॥ *ध्यानम्* ॥

आरक्ताभां त्रिनेत्रां, मणिमुकुटवतीं, रत्नताटङ्करम्यां
हस्ताम्भोजैः, सपाशांकुशमदनधनुः, सायकैर्विस्फुरन्तीम्
आपीनो तुङ्गवक्षो, रुहतट विलुठता, हारोज्जवलाङ्गी।
ध्याय्याम्यम्भोरुहस्थामरुणविवसना, मीश्वरीमीश्वराणाम् ॥७॥

ॐ स्वधामायै स्वाहा, सुधामायै० धामशालिन्यै० सौभाग्यदायिन्यै० दिवे० सुभगायै० द्युतिवर्धिन्यै० श्रीः कृत्तिवसनायै० कङ्काल्यै० कलिनाशिन्यै० रक्तबीजवधोद्यतायै० सुतन्तवे० बीजसन्ततये० जगज्जीवायै० जगद्बीजायै० जगत्त्रयहितेषिण्यै०

चामीकररुचये० चान्द्रये० साक्षादूषोडशी कलायै० यत्तत्पदानुबन्धायै० यक्षिण्यै० धनदार्चितायै० चित्रिण्यै० चित्रमायायै० विचित्रायै० भुवनेश्वर्यै० चामुण्डायै० मुण्डहस्तायै० घण्डमुण्डवधोद्धरायै० अष्टम्यै० एकादश्यै० पूर्णायै० नवम्यै० चतुर्दश्यै० अमायै० कलशहस्तायै० पूर्ण कुम्भपयोधरायै० अभीरवे० भैरव्यै० भीरायै० भीमायै० महारुण्डायै० रौद्रायै० महाभैरवपूजितायै० निर्मुण्डायै० हस्तिन्यै० चण्डायै० करालदशनाननायै० करालायै० विकरालायै० घोरायै० घुर्घुरनादिन्यै० ऊर्ध्वकेश्यै० बन्धूककुसुमारुणायै० कादम्बर्यै० पटासायै० काश्मीर्यै० कुङ्कुमप्रियायै० क्षान्तये० बहुसुवर्णायै० मतये० बहुसुवर्णदायै० मातङ्गिन्यै० वरारोहायै० मत्तमातङ्गगामिन्यै० हंसायै० हंसगतये० हंस्यै० हंसोज्ज्वलशिरोरुहायै० पूर्णचन्द्रमुख्यै० श्यामायै० स्मितास्यायै० श्यामकुन्तलायै० लेखन्यै० मष्यै० लेखायै० सुलेखायै० लेखकप्रियायै० शङ्खिन्यै० शंखहस्तायै० जलस्थायै० जलदेवतायै० कुरुक्षेत्रवनये० काश्यै० मथुरायै० कांञ्चयै० अवन्तिकायै० अयोध्यायै० द्वारिकायै० मायायै० तीर्थायै० तीर्थकरप्रियायै० त्रिपुष्करायै० अप्रमेयायै० कोशस्थायै० कोशवासिन्यै० कोशिक्यै० ॥ **तेजोसि** ॥ ॐ कुशावर्तायै स्वाहा ॥७००॥

॥ *ध्यानम्* ॥

किं किं दुःखं दनुजदलनि, क्षीयते न स्मृतायां
का का कीर्तिः कुलकमलिनि ख्याप्यते न स्मृतायाम् ।
का का सिद्धिः सुरवर नुते, प्राप्यते नार्चितायां
कं कं योगं त्वयि न चिनुते चित्तमालाम्बितायाम् ॥८॥

ॐ कोशाम्ब्यै स्वाहा, कोशवर्धिन्यै० कोशदायै० पद्मकोशाक्ष्यै० कुसुमायै० कुसुम-प्रियायै० तोतलायै० तुलाकोटये० कूटस्थायै० कोटराश्रयायै० स्वयम्भुवे० सुरूपायै० स्वरूपायै० पुण्यवर्धिन्यै० तेजस्विन्यै० सुभिक्षायै० बलदायै० बलदायिन्यै०

महाकोश्यै० महावार्तायै० बुद्ध्यै० सदसदात्मिकायै० महाग्रहहरायै० सौम्यायै० विशोकायै० शोकनाशिन्यै० सात्त्विक्यै० सत्त्वसंस्थायै० राजस्यै० रजोवृतायै० तामस्यै० तमोयुक्तायै० गुणत्रयविभाविन्यै० अव्यक्तायै० व्यक्तरुपायै० वेदविद्यायै० शाम्भव्यै० शङ्करः कल्पिन्यै० कल्पायै० मनः सङ्कल्पसन्तत्यै० सर्वलोकमयी शक्तये० सर्वश्रवणगोचरायै० सर्वज्ञानवती वाञ्छायै० सर्वतत्त्वावबोधिकायै० जाग्रत्यै० सुषुप्तये० स्वप्नावस्थायै० तुरीयकायै० सत्वरायै० मन्दरायै० मन्दायै० मदिरामोदधारिण्यै० पानभूमये० पानपात्रायै० पानदानकरोद्यतायै० आघूर्णारुणनेत्रायै० किञ्चिदव्यक्तभाषिण्यै० आशपूरायै० दीक्षायै० दक्षायै० दीक्षितपूजितायै० नागवल्ल्यै० नागकन्यायै० भोगिन्यै० भोगवल्लभायै० सर्वशास्त्रमयी विद्यायै० सुस्मृतये० धर्मवादिन्यै० श्रुतये० स्मृतिधरायै० ज्येष्ठायै० श्रेष्ठायै० पातालवासिन्यै० मीमांसायै० तर्कविद्यायै० सुभक्तये० भक्तवत्सलायै० सुनाभये० यातनायै० जात्यै० गम्भीरायै० अभाव वर्जितायै० नागपाशधरामूर्तये० अगाधायै० नागकुण्डलायै० सुचक्रायै० चक्रमध्यस्थायै० चक्रकोणनिवासिन्यै० सर्वमन्त्रमयीविद्यायै० सर्वमन्त्राक्षरावलये० मधुस्रवायै० स्रवन्त्यै० भ्रामर्यै० भ्रमरालकायै० मातृमण्डलमध्यस्थायै० मातृमण्डलवासिन्यै० कुमार जनन्यै० क्रूरायै० सुमुख्यै० ॥ **तेजोसि** ॥ ॐ ज्वर नाशिन्यै स्वाहा ॥८००॥

॥ ध्यानम् ॥

यावत्पदं पदसरोजयुगं त्वदीयं, नाङ्गीकरोतु हृदयेषु जगच्छरण्ये।
तावद् विकल्प जटिला कुटिल प्रकारास्तर्कग्रहाः समयिनांप्रलयं न यान्ति ॥९॥

ॐ अतीतायै स्वाहा।, विद्यमानायै० भाविन्यै० प्रीतिमञ्जर्यै० सर्वसौख्यवती युक्तयै० आहारपरिणामिन्यै० पञ्चभूताना निधानायै० भवसागरतारिण्यै० अक्रूरायै० ग्रहवत्यै० विग्रहायै० ग्रहवर्जितायै० रोहिण्यै० भूमिगर्भायै० कालभुवे० कालवर्जितायै०

कलङ्करहितानार्यै० चतुःषष्ट्यामिधावत्यै० जीर्णायै० जीर्णवस्त्रायै० नूतनायै० नव वल्लभायै० अजरायै० नियत्यै० प्रीत्यै० अतिराग विवर्धिन्यै० पञ्चवातगतेर्भिन्नायै० पञ्चश्लेष्माशयाधरायै० पञ्चपित्तवतीशक्तयै० पञ्चस्थानविभाविन्यै० ऋतुमत्यै० कामवत्यै० बहिप्रस्रविन्यै० त्र्यहायै० रजः शुक्रधरा शक्तये० जरायुर्गर्भधारिण्यै० त्रिकालज्ञायै० त्रिलिङ्गायै० त्रिमूर्तये० त्रिपुर वासिन्यै० अरागयै० शिवतत्त्वायै० कामतत्त्वानुरागिण्यै० प्राच्यै० अवाच्यै० प्रतीचीदिशे० उदीचीदिशे० विदिग्दिशायै० अहङ्कृत्यै० अहङ्कारायै० बालमायायै० बलिप्रियायै० स्रुचे० स्रुवायै० सामधेन्यै० सुश्रद्धायै० श्राद्धदेवतायै० मात्रे० मातामह्यै० तृप्तये० पितृमात्रे० पितामह्यै० स्नुषायै० दौहित्रिध्यै० पुत्र्यै० पौत्र्यै० नप्त्र्यै० शिशुप्रियायै० स्तनदायै० स्तनधारायै० विश्वयोनये० स्तनधय्यै० शिशूत्सङ्गधरायै० दोलायै० दोला क्रीडाभिनन्दिन्यै० उर्वश्यै० कदल्यै० केकायै० विशिखायै० शिखिवर्तिन्यै० खट्वाङ्गधारिण्यै० खट्वायै० बाणपुङ्खानुवर्तिन्यै० लक्ष्यप्राप्तये० काललक्ष्यायै० लक्ष्यायै० शुभलक्षणायै० वर्तिन्यै० सुपथचारायै० परिखायै० खनिर्वृतये० प्राकारवलयायै० वेलायै० महोदधिमर्यादायै० पोषणी-शोषणी शक्तये० दीर्घकेश्यै० सुलोमशायै० ललितायै० मांसलायै स्वाहा ॥ तेजोसि ॥ ॐ तन्व्यै स्वाहा ॥००॥

॥ ध्यानम् ॥

रे मूढाः किमयं वृथैव तपसा, कायः परिक्लिश्यते
यज्ञैर्वा बहुदक्षिणैः किमितरे रिक्ती क्रियन्ते गृहाः।
भक्तिश्चेदविनाशिनी भगवती पादद्वयी सेव्यता
मुन्निद्राम्बुरुहात पत्र सुभगा लक्ष्मीः पुरो धावति ॥१०॥

ॐ वेदवेदाङ्गधारिण्यै स्वाहा, नरासृक्पानमत्तायै० नरमुण्डास्थिभूषणायै० अक्षक्रीडारतये० शार्यै० शारिकायै० शुकभाषिण्यै० शम्बरी-गारुडी विद्यायै० वारुण्यै० वर्णार्चितायै० वाराह्यै० तुण्डहस्तायै० दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरायै० मीनमूर्तिधरायै० मूर्तायै० वदान्यायै० प्रतिमाश्रयायै० अमूर्तायै० निधिरुपायै० शालिग्रामशिलायै० शुच्यै० स्मृतये० संस्काररूपायै० सुसंस्कारायै० संस्कृतये० प्राकृतायै० देशभाषायै० गाथायै० गीत्यै० प्रहेलिकायै० इडायै० पिङ्गलायै० पिङ्गायै० सुषुम्णायै० सूर्यवाहिन्यै० शशिस्रवायै० तालुस्थायै० काकिन्यै० मृतजीविन्यै० अणुरूपायै० वृहद्रूपायै० लघुरूपायै० गुरुःस्थिरायै० स्थावरायै० जङ्गमादेव्यै० कृतकर्मफलप्रदायै० विषयाक्रान्तदेहायै० निर्विशेषायै० जितेन्द्रियायै० विश्वरूपायै० चिदानन्दायै० परब्रह्मप्रबोधिन्यै० निर्विकारायै० निर्वैरायै० विरत्यै० सत्यवर्धिन्यै० पुरुषायै० अज्ञानभिन्नायै० क्षान्त्यै० कैवल्यवर्धिन्यै० विविक्तसेविन्यै० प्रज्ञायै० जनयित्र्यै० बहुश्रुतये० निरीहायै० समस्तेकायै० सर्वलौकेक सेवितायै० सेवायै० सेवा-प्रियायै० सेव्यायै० सेवाफलविवर्धिन्यै० कलौकल्कि प्रियायै० काल्यै० दुष्टम्लेच्छविनाशिन्यै० प्रत्यञ्चायै० धनुर्यष्टयै० खड्गधारायै० दुरानतये० अश्व पलुतये० वल्गायै० सृणये० सन्मृत्युवारनायै० वीरभुवे० वीरमात्रे० वीरसुवे० वीरनन्दिन्यै० जयश्रियै० जयदीक्षायै० जयदायै० जयर्विधन्यै० सौभाग्यसुभगाकारायै० सर्वसौभाग्यवर्धिन्यै० क्षेमङ्कर्यै० सिद्धिरूपायै० सत्कीर्त्तये० पथिदेवतायै० सर्वतीर्थ मयीमूर्तये० सर्व-देवमयी प्रभायै० सर्वसिद्धिप्रदाशक्तये स्वाहा ॥ **तेजोसि** ॥ ***ओ३म् सर्व-मङ्गल-मङ्गलायै स्वाहा*** ॥१०००॥

देव्यापराधक्षमापनम्

अपराध सहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा, क्षमस्व परमेश्वरि ॥१॥

आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम्।
पूजाभावं न जानामि, क्षम्यतां परमेश्वरि ॥२॥

यद्दत्तं भक्तिमात्रेण, पत्रं पुष्पं फलं जलम्।
निवेदितं च नैवेद्यं, तद् गृहाणाऽनुकम्पया ॥३॥

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं, भक्तिहीनं सुरेश्वरि!
यत्पूजितं मया देवि ! परिपूर्णं तदस्तु मे ॥४॥

अज्ञानाद् विस्मृतेर्भ्रान्त्या, यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ॥५॥

कामेश्वरि ! जगन्माता !! सच्चिदानन्द विग्रहे।
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या, प्रसीद परमेश्वरि ॥६॥

यदत्र पाठे जगदम्बिके ! मया, विसर्ग-बिन्द्वाक्षर-हीनमीरितम्।
तदस्तु संपूर्णतमं प्रसादतः, सङ्कल्प सिद्धिश्च सदैव जायताम् ॥७॥

मोहादज्ञानतो वापठितमपठितं साम्प्रतं ते स्तवेऽस्मिन् ;
तत्सर्वं साङ्गमास्तां भगवति वरदे !, त्वत्प्रसादात् प्रसीद ॥८॥

❖❖

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शङ्कराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ॥

—शुक्ल यजुर्वेद अ० १६ मंत्र ४१ ॥

भाषाः शान्ति-सुख-कल्याणादि अभीष्ट फलों के दाता भगवान् महादेव शिव को हमारा नमस्कार है ॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्ति विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि ॥

—यजुर्वेद अध्याय ३६, कण्डिका १७॥

भाषाः स्वर्गरूप जो शान्ति और आकाशरूप जो शान्ति, पृथिवी रूप जो शान्ति, जलरूप-औषधिरूप-वृक्षरूप-सर्वदिवरूप तथा शन्तिस्वरूप जो शान्ति है, वह हम को भी, हे गणपति देव ! आप की प्रसन्नता से प्राप्त होवें ॥

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥

वाणी (ऐं) माया (ह्रीं) ब्रह्मसू-काम (क्लीं) इसके आगे छठा व्यञ्जन (च) वही वक्त्र अर्थात् आकार से युक्त (चा)

सूर्य (म) 'अवाम-श्रोत्र'-दक्षिण कर्ण (उ) और बिन्दु अर्थात् अनुस्वार से युक्त (मुं) टकार से तीसरा (डा) वायु (य) वही अधर अर्थात् 'रो' से युक्त (यै) और (विच्चे) यह नवार्ण मन्त्र उपासकों को आनन्द और ब्रह्मसायुज्य देने वाला है ॥

मन्त्रार्थ

हे चित् स्वरूपिणी महासरस्वती ! हे सद्रूपिणी महालक्ष्मी !
हे आनन्द स्वरूपिणी महाकाली ! ब्रह्म विद्या पाने के लिए हम सब समय तुम्हारा ध्यान करते हैं।
हे महाकाली-महासरस्वती-महालक्ष्मी स्वरूपिणी त्रिगुणात्मिकादेवि ! चण्डिके !
तुम्हें नमस्कार है। अविद्या रूप रज्जु की दृढ़ ग्रन्थि को खोलकर हमें मुक्त करो ॥
माँ जगदम्बे ! नमाम्यहं-प्रणमाम्यहम् ॥

॥ समाप्त ॥

॥ श्री भवानी सहस्रनाम स्तवराजम् ॥

॥ शोधकर्ता : दुर्गा लाल शर्मा राजपुरोहित, किश्तवाड़ ॥